यो वा एतामेवं वेदापहत्य पाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति ।।९।।

जो इस ब्रह्मविद्या को इस प्रकार से जान लेता है, वह समस्त पाप समूह को नष्ट करके अविनाशी, असीम तथा परमानन्दघन ब्रह्म में प्रतिष्ठित हो जाता है, संस्थित हो जाता है।

सूचना

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा की तृतीय वर्षगाँठ का महोत्सव ६, ७ व ८ मार्च २०११

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा, शिवानन्द आश्रम चंडीगढ़ की तृतीय वर्षगाँठ ६, ७ व ८ मार्च २०११ को मनायी जा रही है। इस अवसर पर एक आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया जा रहा है। द डिवाइन लाइफ सोसायटी (अन्तर्राष्ट्रीय) के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा मुख्यालय आश्रम, ऋषिकेश के अन्य वरिष्ठ सन्त-महात्मा अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ायेंगे। सभी भक्तों से सप्रेम-सादर अनुरोध है कि इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो कर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करें।

पंजीकरण एवं जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करें॥

श्री एफ. लाल. कन्सल, अध्यक्ष, मो. नं. ०९८१४०१५२३७

डा. रमणीक शर्मा, सचिव, मो. नं. ०९८१४१०५१५४

पता : शिवानन्द आश्रम, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा

नं. २, सेक्टर २९ ए, चंडीगढ़॥१६००३०

दूरभाष : ०१७२-२६३९३२२

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

ब्रह्मचर्य-साधना :

विवेकहीन साहचर्य से खतरा २

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

मानसिक कल्पनाओं की विनाश-लीला

स्त्रियों की उपस्थिति अथवा उनका ध्यान संसार से विरत और आध्यात्मिक साधना में तत्पर तपस्वियों के मन में भी प्रायः अपवित्र विचार उत्पन्न कर देता है और इस प्रकार उनकी तपश्चर्या के फल से उन्हें वंचित कर देता है। दूसरे व्यक्तियों के मन, विशेषकर आध्यात्मिक साधकों के मन में सूक्ष्म काम-वासना की उपस्थिति को जान लेना बड़ा कठिन है, तथापि दृष्टि, स्वर, भाव, गति, आचरण आदि से कुछ पता लग जाता है।

सावधानीपूर्वक ध्यान दें कि राजा भर्तृहरि ने अपने साधना-काल में क्योंकर क्रन्दन करते हुए कहा थाह्न ''मेरे प्रभो! मैंने अपनी पत्नी त्यागी, अपना राज्य त्यागा। मैं कन्द, मूल तथा फल पर निर्वाह करता हूँ। भूमि मेरी शय्या है। नीला गगन मेरा वितान है। दिशाएँ मेरे वस्त्र हैं। तथापि मेरी काम-वासना मुझसे विदा नहीं हुई।'' काम-वासना की ऐसी शक्ति है।

जेरोम अपने संयम-संघर्ष तथा काम की प्रबलता के विषय में कुमारी यूस्टोचियम को लिखते हैंह्न ''जब मैं उस मरुस्थल में, उस सुविस्तृत निर्जन स्थान में, जो सूर्य की गरमी से झुलसता था तथा एकान्तवासियों को मात्र भयंकर आवास-स्थान प्रदान करता था, मैंने कितनी ही बार कल्पना की कि मैं रोम के आह्लादक पदार्थों के मध्य में हूँ। मैं वहाँ एकाकी था। मेरा अंग एक ढीले कुरते से ढका हुआ था। मेरी त्वचा हवशी की त्वचा की भाँति काली पड़ गयी थी। प्रतिदिन मैं क्रन्दन करता तथा तड़पता था और यदि मैं इच्छा न रहते हुए भी निद्रा से अभिभूत हो जाता, तो मेरा कृश शरीर नंगी भूमि पर पड़ जाता। मैं अपने भोजन तथा पेय के विषय में कुछ नहीं कहता, क्योंकि मरुभूमि में रोगियों को भी शीतल जल के अतिरिक्त अन्य पेय उपलब्ध नहीं होता। अस्तु! मैं जिसने नरक के भय से अपने-आपको इस कारावास का दण्ड दे रखा था और जो बिच्छुओं तथा अन्य पशुओं का साथी था, प्रायः लड़कियों की टोली में होने की कल्पना करता था। उपवास से मेरा मुख पीत-वर्ण हो चला था तथा मेरे शीत शरीर के अन्दर मेरा मन वासनाओं से जल रहा था। पहले से मृत प्रतीत होने वाले शरीर में कामाग्नि की ज्वाला धधकती रहती थी।'' काम की ऐसी शक्ति है।

मन संसार का बीज है। मन ही इस संसार की सृष्टि करता है। मन से सर्वथा पृथक् कोई संसार नहीं है। सभी पदार्थों के चित्र मन में अन्तर्विष्ट हैं। जब मन पदार्थों को नहीं प्राप्त कर सकता है, तो वह इन चित्रों के साथ खिलवाड़ करता है और बड़ी तबाही करता है। यदि आप निरन्तर भगवान् के चित्र का ध्यान करें, तो पदार्थों के चित्र स्वयं नष्ट हो जायेंगे।

वर्जित फल भगवान् द्वारा आध्यात्मिक साधक की परीक्षा

भगवान् साधक के आध्यात्मिक बल की परीक्षा लेने के लिए उसके सम्मुख कुछ प्रलोभन रखते हैं। वे प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करने के लिए उसे बल भी प्रदान करते हैं। इस संसार में सर्वाधिक प्रबल प्रलोभन काम है। सभी सन्तों को प्रलोभनों के मार्ग से हो कर गुजरना पड़ा है। प्रलोभन लाभकारी होते हैं। उनसे लोग प्रशिक्षित तथा शक्तिशाली बनते हैं।

यहाँ तक कि बुद्ध की भी मानसिक शुद्धता की परीक्षा ली गयी थी। उन्हें प्रत्येक प्रकार के प्रलोभनों का सामना करना पड़ा था। उन्हें मार का सामना करना पड़ा था। उस समय ही, उससे पूर्व नहीं, गया में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई। शैतान ने यीशु को विविध रूपों से प्रलोभन दिया। काम बहुत ही शक्तिशाली है। अनेक साधक परीक्षाओं में असफल रहते हैं। व्यक्ति को बहुत सावधान रहना चाहिए। साधक को बहुत ही उच्चकोटि की मानसिक शुद्धता विकसित करनी होगी। तभी वह परीक्षा में टिक सकता है। भगवान् साधकों की परीक्षा लेने के लिए उन्हें बहुत ही प्रतिकूल परिस्थितियों में रखेंगे। वे युवतियों द्वारा प्रलोभित किये जायेंगे। नाम तथा यश गृहस्थियों को साधकों के निकट-सम्पर्क में लाता है। स्त्रियाँ उनकी पूजा करना आरम्भ कर देती हैं। वे उनकी शिष्याएँ बन जाती हैं। धीरे-धीरे साधकों का घोर पतन होता है। इसके अनेक उदाहरण हैं। साधकों को अपने को छिपा कर रखना चाहिए तथा अति-सामान्य व्यक्ति-सा प्रतीत होना चाहिए। उन्हें अपने चमत्कार नहीं प्रदर्शित करने चाहिए।

यद्यपि ऋषि विश्वामित्र कठोर तपस्या में रत थे, जब वे उनका तप भंग करने के लिए इन्द्र के द्वारा प्रेषित स्वर्ग की अप्सरा से मिले, तो अपनी दुर्दान्त इन्द्रियों के कारण आत्म-नियन्त्रण खो बैठे। यदि पत्ती, वायु तथा जल पर निर्वाह करने वाले विश्वामित्र तथा पराशर काम के शिकार बन गये, तो उन सांसारिक लोगों की नियति क्या होगी जो मसालेदार भोजन पर निर्वाह कर रहे हैं? यदि वे अपनी काम-वासना को नियन्त्रित कर सकते हैं, तो विन्ध्याचल पर्वत सागर में तैरने लगेगा तथा अग्नि अधोमुखी हो कर जलेगी।

नैसर्गिक काम-प्रवृत्ति सर्वाधिक शक्तिशाली है। कामावेग दुर्जेय है। यह मन के अन्तर्भौम कक्ष में अपने को छिपाये रख सकता है और जब आप असावधान होंगे, उस समय यह आप पर आक्रमण कर बैठेगा। यह दोगुनी शक्ति से आप पर आक्रमण करेगा। विश्वामित्र मेनका के शिकार बने। एक अन्य महान् ऋषि रम्भा के शिकार बने। जैमिनि एक मिथ्या महिला मासा से उत्तेजित हो उठे। एक प्रभावशाली ऋषि मछली को जोड़ा खाते देख कर उत्तेजित हो उठे थे। एक गृहस्थ साधक अपनी गुरु-पत्नी को ही ले कर भागे। अनेक साधक इस गुप्त आवेग से, विश्वासघाती शत्रु से अवगत नहीं हैं। वे समझते हैं कि वे सर्वथा सुरक्षित तथा शुद्ध हैं। जब उनकी परीक्षा ली जाती है, तो वे निराशाजनक शिकार बनते हैं। सदा एकाकी रहें, ध्यान करें तथा इस आवेग को मार डालें।

अज्ञानी तथा कामुक व्यक्ति के लिए कामिनी और कांचन भगवान् से अधिक उज्ज्वल चमकते हैं।

माया शक्तिशाली है। आदम एक क्षण असावधान होने के कारण पतित हो गये। हौवा ने एक ही कामना के कारण प्रलोभित किया। वर्जित फल मानव-नेत्रों के सम्मुख तत्काल परिपक्व हो जाता है। एक स्थाणु ज्योतिर्मय देव की भाँति दृष्टिगोचर होता है और आपको अपने सम्मुख परम विनम्रता से नतमस्तक होने के लिए प्रेरित करता है। माया तथा उसके जाल से सावधान रहें। स्वर्ण की शृंखला दो टुकड़ों में काटी जा सकती है; परन्तु माया का कौशेय जाल नहीं काटा जा सकता है। असावधानी का एक ही क्षण मोतियों की सम्पूर्ण मंजूषा को काम-वासना तथा कामुकता के अन्धकारपूर्ण अगाध गर्त में उलट जाने के लिए पर्याप्त है।

सरोवर में शैवाल जो क्षण-भर के लिए विस्थापित हो जाता है, पल-मात्र में अपनी आद्य-स्थिति को पुनः धारण कर लेता है। इसी भाँति यदि ज्ञानी पुरुष एक क्षण भी असावधान रहें, तो माया उन्हें भी आवृत कर लेती है। अतः आध्यात्मिक पथ में अनिद्र सतर्कता की आवश्यकता है। लोकोक्ति हैह्वह्व ''**कानी के ब्याह में नौ सौ जोखिम।**'' ज्ञान-रूपी फल को आपके खाने से पूर्व ही बन्दर-रूपी माया आपके हाथ से छीन ले जायेगी। यदि आप उसे निगल भी जायें, तो वह आपके गले में अटक सकता है। अतः भूमा अथवा परमोच्च साक्षात्कार प्राप्त होने तक आपको सतत सतर्क तथा सावधान रहना होगा। धोखे से यह समझ कर कि आपने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है, आपको अपनी साधना बन्द नहीं करनी चाहिए।

जो व्यक्ति एकान्त में रहता है, वह प्रलोभनों तथा खतरे से अधिक अरक्षित होता है। उसे बहुत ही सतर्क और सावधान रहना होगा। उसके मन को कुछ भी कर बैठने का लोभ आयेगा; क्योंकि वहाँ उसके दुष्कृत्यों को देखने वाला कोई भी नहीं होता। सभी दमित कुवृत्तियाँ उसके ऊपर दोगुनी शक्ति से आक्रमण करने के अवसर की प्रतीक्षा करती रहेंगी। वह ठीक उस व्यक्ति की तरह है जो एक बड़े थैले में व्याघ्र, सर्प तथा रीछ के साथ डाल दिया गया हो। क्रोध, काम तथा लोभ-रूपी शत्रु आपके अनजाने ही आप पर अधिकार कर लेंगे। जब आप अध्यात्म-पथ पर अकेले चलते हैं, तब वे उन दस्युओं की भाँति आप पर आक्रमण करेंगे जो सघन वन में एकाकी पथिक पर आक्रमण करते हैं। अतः सदा ज्ञानियों की संगति में रहिए। पथ-भ्रष्ट न बनिए। **(अनूदित)**

भक्ति और ज्ञान

भक्ति ज्ञान की विरोधी नहीं है। इन दोनों में अन्योन्याश्रयी सम्बन्ध है। दोनों एक ही गन्तव्य तक पहुँचाते हैं। भक्ति तथा ज्ञान अम्ल तथा क्षार की तरह परस्पर विरोधी नहीं हैं। व्यक्ति भक्तियोग को ज्ञानयोग के साथ सम्मिलित कर सकता है। भक्ति का फल ज्ञान है। परा भक्ति और ज्ञान एक ही हैं। पूर्ण ज्ञान भक्ति है। पूर्ण भक्ति ज्ञान है।

स्वामी शिवानन्द

यह ठीक है; अत: यह करें!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण एक महत्त्वपूर्ण शब्द कहते हैंह्नह्न''**कृपणा: फलहेतव:**'' (फल के हेतु बनने वाले अत्यन्त निम्न श्रेणी के हैं)। वे कहते हैं कि वह तो अत्यन्त कृपण और लोभी व्यक्ति होते हैं जो सदा कुछ-न-कुछ पाने की आशा को ले कर ही काम करते हैं। भगवान् कहते हैं कि यह अत्यन्त निकृष्ट विचार है। यह उदार, उदात्त अथवा उत्तम दृष्टिकोण नहीं है।

व्यक्ति सदा ही कुछ प्राप्त करने की इच्छा क्यों करे? इसलिए कुछ भी क्यों न करे कि ऐसा करना भला है, अच्छा है, यह दूसरों के लिए अच्छा है; अत: दूसरे भी इससे लाभान्वित हों? आप किसी काम को अच्छा केवल इसीलिए क्यों समझते हैं कि उससे आपको कुछ लाभ होता है? इस दृष्टि से अच्छा क्यों नहीं मानते कि वह अन्य लोगों के लिए उपयोगी है? सदैव 'मैं' और 'मेरे' को ले कर और 'मेरे' तथा 'अपनों के लिए' ही सोच कर सब-कुछ अच्छा देखा और समझा जाता है!

भगवान् कहते हैंह्नह्न''यह प्रशंसनीय नहीं है। मैं इसको उचित नहीं समझता। तुम मेरे बच्चे हो। सारा संसार तुम्हारा है। मैं तुम्हारा हूँ। और इसे अधिक तुम क्या चाहते हैं? तुम कितने महान् हो, इसे तुम क्यों नहीं समझते? तुम कितने भाग्यशाली हो, कितने धन्य हो, कैसे हर प्रकार से तुम्हारा जीवन अपने-आपमें पूर्ण है; क्योंकि मैं तुम्हारे भीतर निवास करता हूँ! इससे बढ़ कर और कुछ है क्या? इससे ऊपर और कुछ हो सकता है क्या? जब मैं तुम्हारा हूँ, तब फिर इससे अधिक बढ़ कर और क्या है जो तुम प्राप्त करना चाहते हो? ऐसे तुच्छ विचार कि 'यदि मैं यह करूँ, तो मुझे क्या मिलेगा?' या 'मैं कुछ पाने के लिए क्या करूँ?' इत्यादि मन में लाने से तुम्हें क्या मिलने वाला है?''

वे कहते हैंह्नह्न''ऐसे चिन्तन को छोड़ो। उदार बनो। विशाल हृदयी बनो। अपने हृदय को संकीर्ण मत बने रहने दो। अपनी इस तुच्छ 'मैं', जो कि हर प्रकार से असत्य ही है, के लिए कुछ प्राप्त करने के सभी विचारों को त्याग दो। इस 'मैं' का कोई अस्तित्व नहीं है, यह कल्पना मात्र ही है और सच तो यह है 'मैं' केवल असत्य और तुच्छ ही नहीं, अपितु यह ही आपकी समस्या भी है। यह 'मैं, मैं, मैं, मेरा, मेरा, मेरा, मेरे लिए, मेरे लिए, मेरे लिए' की सृष्टि करती रहती है। तुम्हें ज्ञात नहीं कि यही तुम्हारी समस्याओं की जन्मदात्री है। तो भी तुम सदा उसको पोषित करना चाहते हो, उसे सँजोये रखना चाहते हो, सुरक्षित रखना और सम्मानित रखना चाहते हो। यह तुम्हें निर्देशित करती है, तुम पर शासन करती है। तुम इस 'मैं', 'मेरे' और 'मेरे लिए' से ही निर्देशित होते रहना चाहते हो।''

क्यों आप दिव्य जीवन जीते हैं? क्योंकि ऐसा जीवन श्रेष्ठ जीवन है। क्योंकि ऐसा करना भव्य और उदात्त जीवन जीना है। क्योंकि ऐसा जीवन जीना अच्छा है। और क्योंकि ऐसा करने से समस्त संसार के लिए अच्छा होने वाला है। यदि इससे आपको कुछ

कठिनाइयों का सामना भी करना पड़े, तो भी क्या है! यदि यह बहुत सरल और सुखकर नहीं प्रतीत होता, तो भी क्या है! इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता।

अत: भगवान् श्री कृष्ण के द्वारा दिये गये इस निर्णायक विचार पर हमें अच्छी तरह ध्यान देना चाहिए। इस पर गहराई से मनन करना चाहिए, गहनता से चिन्तन करना चाहिए। प्रत्येक वस्तु से कुछ प्राप्त हो, यह देखना क्यों आवश्यक है? यदि यह अपने-आपमें अच्छा है, तो क्यों नहीं किया जाना चाहिए?

पश्चिमी जगत् की प्रसिद्ध कहावत इस आदर्श को अभिव्यक्त करती हैह्न''सद्गुण अपने-आपमें प्रतिफल ही हैं।'' आप सद्गुणों को जीवन में लायें, इसलिए नहीं कि इनसे आपको कुछ फल-प्राप्ति होगी, अपितु इसलिए करें कि ऐसा करना अच्छा है। यह होना ही स्वयं में अच्छा है, व्यक्ति को ऐसा दृष्टिकोण रख कर कार्य करना चाहिए।

वैदिक युग के एक ऋषि ने भगवान् से प्रार्थना कीह्न''सब ओर से हममें शुभ विचार प्रवेश करें, जिससे कि हम भलाई का केन्द्र बन जायें।'' इतना होना ही पर्याप्त है। भला ग्रहण करने, भला बनने और भला करने से कुछ प्राप्त हो, ऐसी इच्छा न रखें। यह 'कुछ प्राप्त होने' की मनोवृत्ति एक उदात्त और उत्कृष्ट वस्तु को व्यापारिक वृत्ति के निम्न स्तर पर ला देती है। आप इसलिए कुछ करना चाहते हैं कि उससे आपको कुछ लाभ हो। यही तो प्रत्येक दुकान वाला करने में लगा हुआ है। यह मनोवृत्ति आध्यात्मिक नहीं है।

''मैं भगवद्-दर्शन पाना चाहता हूँ, मैं आनन्दातिरेक पाना चाहता हूँ, भाव-समाधि में जाना चाहता हूँ।'' अर्थात् आपकी सम्पूर्ण साधना इस स्तर तक ही है कि आप इसलिए कुछ करना चाहते हैं कि उससे आपको कुछ विशेष प्राप्ति हो, आप अपने को कुछ विशिष्ट समझ सकें। क्या इसी के लिए आप आध्यात्मिक जीवन में आये हैं? क्या इसी के लिए मिलारेपा ने सैकड़ों कष्ट और मुसीबतें सही थीं, दारुण दु:ख उठाये थे?

रामकृष्ण कहा करते थे कि यह तो ऐसा ही है जैसे बीज बोने के अगले ही दिन निकाल कर देखने लग जायें कि पौधा कुछ हुआ भी कि नहीं? किन्तु कुछ भी क्यों होना चाहिए? आप अपना कर्तव्य करें। साधना के प्रति हमारा दृष्टिकोण यह होना चाहिएह्न''मैं जीवन में अपना उद्देश्य पूर्ण कर रहा हूँ। मैं अपने मनुष्य होने के धर्म को निभा रहा हूँ। भगवान् की मेरे लिए जो योजना है, जो उनकी इच्छा है, उसे मैं पूर्ण कर रहा हूँ। उन्होंने मेरे लिए अनुभव की एक विशेष अवस्था निश्चित की हुई है, अत: यही अपने-आपमें एक विशेष कारण बन जाता है कि मैं इस प्रकार का जीवन व्यतीत करूँ। इसके अतिरिक्त अन्य कोई कारण होने की आवश्यकता ही नहीं है।

''यह अनिवार्य नहीं है कि वे मुझे अवश्य ही इसका फल प्रदान करें, अमुक वस्तु-पदार्थ मुझे मिलें। मैंने यह इसलिए करना है; क्योंकि मेरा ऐसा करना ही ठीक है। मानव होने के नाते मेरे अस्तित्व का अर्थ और उद्देश्य यही है और यदि मैं यह करने में दृढ़ता से लगा रहता हूँ, तो यह स्वयं में ही मेरे लिए पर्याप्त सन्तुष्टि है। मुझे अत्यन्त सन्तोष है कि मैंने ईश्वर-प्रदत्त जीवन-रूपी इस उपहार का दुरुपयोग नहीं किया, इसे व्यर्थ नहीं गँवाया। मैंने इसका सर्वोत्तम उपयोग किया है। इतना ही मेरे लिए पर्याप्त है। मुझे यह देखते रहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि मैं कहाँ तक सफल हुआ हूँ, मैंने क्या प्राप्ति की है। मैंने अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरोन्मुखी बनाना है, मुझे

अपने परम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए जीना है। वह जो करते हैं, करें।''

भगवान् के सच्चे भक्त का भाव ऐसा होता है। 'कुछ पाने के लिए कुछ करने' के इस शुष्क और सीमित भाव को त्याग देने से आप स्वयं को इस तुच्छ चिन्तन से मुक्त कर लेते हैं और आप स्वयमेव ही उत्साहपूर्ण हृदय से अपने जीवन को दिव्य बनाने के कार्य में लगा देते हैं। आपको यह जीवन इस उदात्त प्रतिपूर्ति की ओर उपयोग करने के लिए ही दिया गया है।

आप सब इसी विशाल-हृदयता से प्रकाशित हों! जो कुछ भी भला है, शुभ है, सुन्दर है, आध्यात्मिक है और उदात्त है, उसकी ओर उदार-हृदयता, विशाल-हृदयता आपमें हो! और ऐसा होने पर, यदि इसमें से कुछ भलाई कुछ लाभ दूसरों को, भगवान् की सृष्टि को प्राप्त हो जाता है, तो बहुत अच्छा है; किन्तु यह भी भगवान् की इच्छा! आप अपना जीवन जियें, क्योंकि यह दिव्य और उदात्त है, केवल ऐसा जीवन ही जीने योग्य है। अन्य कोई कारण इसके लिए अपेक्षित नहीं है।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

भगवद्गीता १

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

सन्दर्भ

महाभारत की मुख्य दार्शनिक विचारधारा भगवद्गीताह्वह्वभगवान् का गीतह्वह्वमें निहित है। महाभारत युद्ध प्रारम्भ होने से पूर्व ही अर्जुन भ्रमवश किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। युद्ध करने के लिए वह पहले ही अनिच्छुक था तथा इसके लिए बहुत समझाने-बुझाने पर सहमत हुआ था। एक बार युद्ध करने के कार्य (जो उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा के अनुरूप ही था) को सम्पन्न करने की स्वीकृति दे देने के बाद पीछे हट जाना मात्र व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तथा शिष्टाचार तक ही सीमित रहने वाली बात नहीं थी। यह अपने द्वारा ही स्वीकृत कार्य-क्षेत्र से दूर हट कर सोचने वाली बात थी। मानवीय दुर्बलता ने उस शूरवीर अर्जुन पर विजय पा ली और अर्जुन ने प्रेम-घृणा के पाश में फँस कर कर्मफलासक्ति के आगे घुटने टेक दिये।

अर्जुन की इस मनोदशा ने एक विश्वजनीन प्रश्न को जन्म दियाह्वह्वइस जगत् में कर्तव्य का स्वरूप क्या है? युद्ध-क्षेत्र में घटित हुई इस घटना ने जीवन की एक महत्त्वपूर्ण समस्या का प्रवेश-द्वार खोल दिया। अर्जुन की दुर्गति एक विशेष मानवीय स्थिति का पर्याय बन गयी। अर्जुन की समस्या मानव-जाति की समस्या थी। कृष्ण द्वारा प्रस्तुत इस समस्या का समाधान सम्पूर्ण मानव-जाति के लिए ईश्वर का सन्देश है।

अर्जुन की इस विलक्षण (मानवीय) समस्या पर कृष्ण की प्रतिक्रिया बड़ी विस्मयकारक थी। भगवद्गीता का प्रारम्भ एक प्रभावशाली नाटकीय स्थिति से होता है। आध्यात्मिक रूप से अन्धे धृतराष्ट्र द्वारा प्रश्न करने के बाद युद्ध-स्थल पर दुर्योधन का प्रवेश होता है। बढ़ा-चढ़ा कर बातें करने वाले दुर्योधन की गर्वोक्तियाँ इस बात की द्योतक थीं कि उसे अपनी विशाल सेना की गुणात्मक शक्ति पर सन्देह था। उसकी सेना में भीष्म जैसे अपराजेय किन्तु अनिच्छुक योद्धा थे, द्रोण के समान वीर किन्तु चरित्रहीन सैनिक थे और कर्ण के समान विश्वसनीय परन्तु शक्तिहीन मित्र थे। दूसरी ओर पाण्डवों के पक्ष में कृष्ण के समान हार्दिक समर्थक थे और उनके पास उनकी विजय के इच्छुक अनेकानेक देवताओं की शुभ-कामनाओं का सम्बल था। भाग्य पाण्डवों की सेना का साथ देता प्रतीत हो रहा था, फिर भी जब अर्जुन ने समझ लिया कि युद्ध में उसके सम्बन्धियों की मृत्यु निश्चित है, विजय प्राप्त होना अनिश्चित है तथा अनगिनत व्यक्तियों के मारे जाने से सामाजिक अस्थिरता का वातावरण उत्पन्न हो जायेगा, तब शोक-सन्तप्त हो कर उसने कृष्ण की दिव्यता के सम्मुख अपनी दुर्बलताओं को प्रकट कर दिया। जो-कुछ उसने समझ लिया था, वह उसके लिए युद्ध न करने का निर्णय लेने के लिए एक पर्याप्त आधार था। कृष्ण ने अर्जुन को जो उत्तर दिया, वह एक अमर उपदेश बन गया।

आत्मा की अमरता

कृष्ण का उपदेश आत्मा की अमरता तथा

अनश्वर तत्त्व की मृत्यु पर शोक करने की व्यर्थता की उद्घोषणा से प्रारम्भ होता है। आत्मा का जन्म-मृत्यु तो पोशाक बदलने के समान है, जब कि व्यक्ति का सार-तत्त्व इस प्रक्रिया में नितान्त अपरिवर्तित रहता है। दुःख, सुख आदि परिवर्तनों का अनुभव तत्त्वों का (मन और इन्द्रियों के माध्यम से प्रक्षिप्त) मूल चेतना के सम्पर्क में आने के परिणाम-स्वरूप होता है। यह सम्पर्क अस्थायी होता है तथा इसकी प्रतिक्रियाओं को धैर्यपूर्वक सहन करना चाहिए। जो वास्तविक नहीं है, उसकी सत्ता नहीं हो सकती। जो वास्तविक है, उसका अनस्तित्व नहीं हो सकता। आत्मा वास्तविक तत्त्व है। सभी प्रकार के सम्पर्क अवास्तविक हैं। अनश्वर आत्मा का नाश नहीं किया जा सकता।

युद्ध-क्षेत्र में सम्बन्धियों के जीवन का अन्त होने की सम्भावना से क्षुब्ध हो कर अर्जुन ने जो तर्क प्रस्तुत किये, उनका उत्तर कृष्ण ने समस्त जीवन के आधार-स्वरूप आत्मा की अनश्वरता के सिद्धान्त का प्रतिपादन करके दिया। परन्तु कृष्ण का उपदेश केवल इतना ही नहीं है। उसका केन्द्र-बिन्दु ईश्वर की परम तत्त्वता है।

सर्वशक्तिमान् ईश्वर

ईश्वर ही परम सत्ता है। वह ही महत् ब्रह्म है, जिसे मानवीय दृष्टिकोण से न तो सत्ताधारी (सत्) और न अस्तित्वहीन (असत्) कहा जा सकता है। यह सर्वव्यापी है। इसके हाथ-पैर सर्वत्र हैं; इसकी आँखें, कान, मुख भी सर्वत्र हैं। सभी इन्द्रियों के बोध के लक्षण इसमें हैं, परन्तु ज्ञानेन्द्रियाँ नहीं हैं। बाह्य वस्तुओं से इसका कोई सम्बन्ध नहीं रहता, परन्तु यह जगत् की समस्त वस्तुओं का आधार है। यह वर्णनातीत है। परिभाषित करने वाले समस्त विशेषण पदों की सीमाओं से यह परे है, परन्तु यह विशेषणों का भण्डार है। प्रत्येक वस्तु के अन्दर-बाहर होने के कारण यह गतिशील भी है तथा स्थिर भी। यह इतना सूक्ष्म है कि भौतिक चक्षुओं से दृष्टिगोचर नहीं होता। यह असीम है, इस कारण ऐसा प्रतीत होता है कि यह बहुत दूर है; परन्तु यह प्रत्येक प्राणी की आत्मा होने के कारण अत्यन्त निकट भी है।

पृथक्-पृथक् शरीरों में पृथक्-पृथक् ईश्वर की प्रतीति होती है; परन्तु विभिन्न ऊर्मियों के नीचे प्रवाहित होते हुए अविभाजित सागर के समान यह अविभाज्य है। यह प्रत्येक वस्तु को आत्मसात् कर लेता है तथा प्रत्येक वस्तु को निर्मुक्त करता है। अज्ञान-तिमिर के परे रह कर यह समस्त प्रकाश-पुंजों को प्रकाशित करता है। भगवद्गीता में ईश्वर इसी रूप में वर्णित है।

जब परम तत्त्व (ईश्वर) को ब्रह्माण्ड के आधार के रूप में देखा जाता है, तो यह सर्वव्यापक विराट् बन जाता है। गीता के ग्यारहवें अध्याय में इसी ब्रह्माण्ड-व्यापक परम तत्त्व का वर्णन है। नश्वर मानव का अनित्य मन ईश्वरत्व (देवत्व) के इस रूप का मानसिक दर्शन करने के लिए सक्षम नहीं होता; क्योंकि मन अथवा शरीर के विचार और कार्य दिशा-काल की वस्तुनिष्ठ सीमाओं से आबद्ध होते हैं, जब कि परम तत्त्व दिक्काल से परे होता है। उस परम तत्त्व को समझना **(ज्ञानम्)**, देखना **(दृष्टम्)** तथा उसमें प्रवेश करना **(प्रवेष्टम्)** आवश्यक है। जब ऐसा हो जाता है, तो वैयक्तिकता का उत्कर्ष हो जाता है। वह व्यक्तित्व के सर्वव्यापक रूपान्तरण के सीमा-क्षेत्र में प्रवेश कर जाता है।

ईश्वर वस्तुओं का सार्वभौम निर्माता है। वह अपनी ब्रह्माण्ड-व्यापी सृष्टि-योजना के अन्तर्गत घटित होने वाली समस्त घटनाओं का नियन्ता है। प्रत्येक

व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह कर्ता तथा भोक्ता होने के अभिमान से रहित हो कर ईश्वर का उपकरण मात्र बन कर कर्म करे; क्योंकि उसका जीवन और किसी के नहीं, केवल ईश्वर के अधीन है। इस सत्य का बोध तभी हो पाता है, जब आध्यात्मिक दृष्टि (दिव्य चक्षु) का विकास हो जाता है। इन्द्रियों या बुद्धि की सहायता से इसे (सत्य को) नहीं समझा जा सकता।

कृष्ण के विराट् रूप को देख कर अर्जुन की अहंकारी वैयक्तिकता हक्की-बक्की रह गयी। अर्जुन को लगा कि उसका समूचा अस्तित्व अपनी दिव्य कान्ति से सहस्रों सूर्यों के प्रकाश को मन्द कर देने वाले उस विराट्, प्रदीप्त तथा शाश्वत रूप की चकरा देने वाली ऊँचाइयों में लुप्त हो जायेगा। उस रूप का बखान करने से मानवीय भाषा गौरवान्वित होती है। उसका वर्णन करते समय कवि की समस्त क्षमताएँ चूक जाती हैं।

कोई ऐसा स्थान नहीं है, जहाँ ईश्वर विद्यमान न हो। कोई ऐसा पदार्थ नहीं है, जिसमें वह न हो। उसकी महिमा प्रत्येक ऐसी वस्तु में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है जिससे किसी-न-किसी रूप में किसी प्रचण्ड शक्ति की अभिव्यक्ति होती है। उस ईश्वर से जो कोई भी सान्त्वना की याचना करता है, वह कभी दुःख या नाश को प्राप्त नहीं होता। जो व्यक्ति ईश्वर को एकमात्र मान कर मात्र उसी का चिन्तन करता हुआ उसकी शरण में जाता है, उसके ऊपर सदैव ईश्वर का वरदहस्त रहता है तथा उसकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाती है।

ईश्वर मानव से धन-सम्पत्ति की अपेक्षा नहीं रखता। उसे चाहिए केवल मानव की भक्ति और आत्म-समर्पण। इसकी अभिव्यक्ति वह (मानव) मात्र पत्र-पुष्प से भी कर सकता है। ईश्वर का न कोई मित्र है और न कोई शत्रु। उसे व्यक्ति के अच्छे-बुरे कर्मों से भी कोई सरोकार नहीं है।

अखिल ब्रह्माण्डनायक के रूप में कृष्ण घोषित करते हैंह्नह्न''अर्जुन! मैं ही यज्ञ हूँ। मैं ही आहुति हूँ। मैं ही मन्त्र हूँ। मैं ही कर्मकाण्ड हूँ। मैं ही बलिदान हूँ। मैं ही यज्ञ की अग्नि हूँ और मैं ही यज्ञ को अर्पित की जाने वाली सामग्री हूँ। मैं ब्रह्माण्ड का जनक हूँ। सभी प्राणियों का पितामह तथा माता हूँ। मैं सबका रक्षक हूँ। मैं ही लक्ष्य हूँ, अवलम्ब हूँ, परम सत्ता हूँ, साक्षी हूँ, आश्रय हूँ, मित्र हूँ, मूल तत्त्व हूँ, विध्वंस-रूप हूँ, आधार हूँ, भण्डार हूँ, अविनाशी बीज (मूल स्रोत) हूँ। मैं ही सूर्य बन कर उष्णता प्रदान करता हूँ। मैं ही वृष्टि पर नियन्त्रण रखता हूँ। मैं ही अमरता तथा मृत्यु हूँ। मैं ही अस्तित्व हूँ। मैं ही अनस्तित्व हूँ।''

साधक अपनी क्षमताओं और प्रकृति के अनुकूल किसी भी मार्ग से ईश्वर-प्राप्ति के लिए आगे बढ़ सकता है। ईश्वर का कोई पन्थ नहीं है, कोई सम्प्रदाय नहीं है, कोई धर्म नहीं है। नर-नारी, बाल-वृद्ध, मूर्ख-विद्वान्, ऊँचे और नीचे सामाजिक स्तर वाले व्यक्तिह्नह्नसभी ईश्वर तक पहुँच सकते हैं, परन्तु पहुँच उन्हीं की होती है जो उसके प्रति अटल प्रेम और निश्चल भक्ति का भाव रखते हैं।

समस्त दुःखों से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय समस्त सांसारिक सहारों को भूल कर ईश्वर के शरणागत होना है। उसके प्रति इस प्रकार की भक्ति रखना सरल नहीं है। अनेक जन्मोंह्नक इसका अभ्यास करना पड़ता है। ईश्वर को सर्वस्व मानने वाले साधक को ढूँढ़ पाना कठिन है। **(अनूदित)**

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति-कथाएँ ५

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

भेड़िया और भेड़ का बच्चा

एक भेड़िया एक नदी में पानी पी रहा था। नीचे की ओर एक भेड़ का बच्चा भी पानी पी रहा था। उस भेड़िये के मन में उस मेमने को खाने की इच्छा हुई। भेड़िया मेमने के पास आया और बोलाह्न ''हे दुष्ट! मेरा पानी तू क्यों जूठा कर रहा है?''

मेमने ने कहाह्न ''महाराज! मैं कैसे पानी जूठा कर सकता हूँ? पानी तो आपकी ओर से मेरी ओर बह रहा है।'' भेड़िये ने कहाह्न ''नौ महीने पहले तूने मुझे गाली दी थी।'' मेमने ने कहाह्न ''तब तो मैं पैदा भी नहीं हुआ था।'' भेड़िये ने कहाह्न ''तब वह तेरी माँ होगी।'' यह कर कर भेड़िया फौरन झपट पड़ा और उसने मेमने को चीर-फाड़ कर खा डाला।

दूसरे का दोष देखना बहुत आसान है। बालकों और सयानों में भी कई ऐसे भेड़िये होते हैं। जो दुष्ट बच्चे दूसरों को तंग करते हैं, वे सचमुच भेड़िये ही हैं। अपने अन्दर जो पशुता है, उसे दूर करो। भले बनो, भला करो।

राजमणि

राजमणि मदुरा का निवासी था। वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ता था। उसके माता-पिता, दो भाई और बूढ़े दादा-दादी थे।

उसका दादा पिचुमणि ८० साल का था। पिचुमणि राजमणि को बहुत चाहता था। राजमणि जो भी माँगता, वह उसे देता था। कोई भी काम पड़ता, तो वह राजमणि को ही बार-बार आवाज देता। राजमणि अपने दादा को नहीं चाहता था; क्योंकि वह उसे बार-बार काम करने को बुलाता रहता था। उसे खेलने को भी समय नहीं मिलता था। एक दिन शाम को उसका एक मित्र खेलने आया। पिचुमणि ने उसी समय राजमणि से नहाने के लिए गरम पानी ला देने को कहा। पिचुमणि को कम दिखायी पड़ता था। वह बिना किसी का सहारा लिये चल-फिर नहीं सकता था।

राजमणि को गुस्सा आ गया। भगोने में उबलता पानी ले आया और बूढ़े के शिर पर उँडेल दिया। उसके सारे शरीर में फफोले पड़ गये।

हे गोविन्द! राजमणि की तरह कभी व्यवहार न करना। आज्ञाकारी बनो। माता-पिता तथा गुरु जनों की सेवा करना सबसे बड़ा कर्तव्य है। तभी तुम्हें सच्चा सुख, शान्ति और समृद्धि प्राप्त होगी।

अपने काम से काम रखो

एक शरारती बन्दर था। एक दिन खेलते-कूदते वह जंगल में जा पहुँचा। वहाँ एक लट्ठा अधूरा चिरा पड़ा था। चिरे हुए हिस्से में चीरने वालों ने लकड़ी की एक गुल्ली डाल रखी थी। गुल्ली के कारण लकड़ी के बीच में दरार हो गयी थी।

बन्दर गुल्ली के पास जा बैठा। वह उस गुल्ली को खींच कर निकालना चाहता था। वह बहुत मजबूती से फँसी हुई थी, फिर भी पूरी ताकत लगा कर बन्दर ने उसे निकाल ही डाला। लकड़ी के दोनों भाग तुरन्त

एक-दूसरे पर चिपक गये और बेचारे बन्दर की पूँछ उसमें फँस गयी। बन्दर वहीं तड़फ-तड़फ कर मर गया।

दूसरों के मामलों में अपनी टाँग न अड़ाओ। अपने काम से मतलब रखो। अपनी राय न देते फिरो। स्वभाव से ही नम्र रहो। कम बोलो, अधिक सोचो-विचारो।

आत्म-निर्भरता

एक खेत में एक चण्डूल चिड़िया अपने बच्चों के साथ रहती थी। वह सबेरे उड़ जाती और कुछ दाने चुग लाती। उसने बच्चों से कह रखा थाह्न ''मेरे न रहने पर जो-कुछ भी हुआ करे, मुझे शाम को बतलाया करो।'' एक शाम को बच्चों ने कहा कि 'खेत का मालिक अपने मित्रों से फसल काटने को कह रहा था।'

चण्डूल ने कहाह्न ''घबराने की कोई बात नहीं। हमें यहाँ कोई खतरा नहीं है।'' अगले दिन बच्चों ने बताया कि खेत का मालिक अपने पड़ोसियों से फसल काटने को कह रहा था। चण्डूल ने कहाह्न ''प्यारे बच्चो! अब भी कोई खतरा नहीं है।'' उसके अगले दिन बच्चों ने कहाह्न ''कल मालिक खुद अपने बच्चों के साथ आ कर फसल काटने वाला है।'' तब चण्डूल ने कहाह्न ''हाँ, अब खतरा है। अब बिना देर किये किसी सुरक्षित स्थान पर हमें चले जाना चाहिए। मालिक कल निश्चय ही आयेगा; क्योंकि काम उसका अपना है।''

यदि चाहते हो कि काम ठीक तरह से हो, तो तुम अपना काम स्वयं करो। दूसरों के भरोसे न रहो। खाना तुम खाते हो। इसके लिए तुम दूसरों पर निर्भर नहीं रहते।

माता-पिता की सेवा करो

माता-पिता की सेवा ईश्वर की पूजा के समान है। माता पार्वती ने एक बार अपने पुत्र गणेश और कार्तिकेय के आगे एक बढ़िया फल रखा और कहाह्न ''जो सारी पृथ्वी की परिक्रमा करके पहले लौट आयेगा, उसे यह फल मिलेगा।''

कार्तिकेय अपने वाहन मोर पर सवार हुए और पृथ्वी की परिक्रमा करने के लिए दौड़ चले। गणेश ने माता पार्वती और पिता शंकर की तीन बार परिक्रमा की और फल माँगा। पार्वती ने वह फल गणेश को दे दिया और वह उसे खा गये।

तीन दिन के बाद कार्तिकेय लौट कर आये और देखा कि गणेश फल खा गये हैं। तब कार्तिकेय माता-पिता की महिमा समझ गये।

दिव्य जड़ी

दो विद्यार्थी राम और शिव अपने शिक्षक के लिए एक-एक भारी टोकरी ले जा रहे थे। शिव बड़बड़ाते हुए कहने लगा कि उसकी टोकरी बड़ी वजनदार है। राम हँसने लगा मानो उसकी टोकरी हलकी हो।

शिव ने पूछाह्न ''तुम क्योंकर हँस रहे हो? तुम्हारी टोकरी तो मेरी टोकरी से भी ज्यादा भारी है और तुम मुझसे ज्यादा दुर्बल भी हो।'' राम ने उत्तर दियाह्न ''मैंने अपनी टोकरी में एक छोटी-सी जड़ी रख छोड़ी है, जिससे मेरी टोकरी हलकी हो गयी है।''

शिव ने पूछाह्न ''राम! मुझे बताओ, वह कौन-सी जड़ी है? मैं भी उसे अपनी टोकरी में रखना चाहता हूँ, जिससे कि इसका भार घट जाये।''

राम ने कहाह्न ''मेरे मित्र! सबसे कीमती दिव्य जड़ी धैर्य है, जो कि भार को हलका कर देती है।''

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

बाल-स्तम्भ :

हारिये न हिम्मत...

स्वामी रामराज्यम्

उत्तर प्रदेश के वाराणसी जनपद में एक गाँव है कुआरदल्लीपुर। वहाँ के निवासी रमेश वर्मा की बेटी रानी की कहानी है यह। सन् २००१ की बात है। एक दिन रानी पशुओं के लिए मशीन से चारा काट रही थी। तभी उसके हाथ मशीन में फँस गये। इलाज तो हुआ परन्तु उसका अन्त सुखद नहीं हुआ। डाक्टर को उसके दोनों हाथ काट देने पड़े। रानी बहुत रोयी। उन दिनों वह पाँचवीं कक्षा में पढ़ रही थी, अब वह कैसे पढ़े? पढ़ने का मन तो बहुत होता था, लेकिन क्या करे वह?

एक दिन उसके अन्दर से कोई बोल पड़ाह्लपैर से लिखने की कोशिश करो। उसने पैर से लिखने का अभ्यास करना शुरू कर दिया। कलम को पैरों की उँगलियों में फँसा कर जब वह लिखने की कोशिश करती, तभी अन्दर से एक आवाज आतीह्ल'ठीक है, ठीक है, रानी। अभ्यास करती रहो। हिम्मत नहीं हारना।'

रानी ने हिम्मत नहीं हारी, उसकी पढ़ाई रुकी नहीं। जो आगे बढ़ता रहना चाहे, उसे भला कौन रोक सकता है। पैर से लिख कर ही उसने इण्टर तक की पढ़ाई पूरी कर ली। इतना ही नहीं, हाई स्कूल और इण्टर की परीक्षायें उसने अच्छे अंकों से उत्तीर्ण कीं। इस समय वह गाजियाबादह्लस्थित आर. के. जी. आई. टी. में मेकेनिकल इंजीनियरिंग की छात्रा है। आश्यचर्यजनक, किन्तु सत्य! चमत्कार!

बच्चो, इस चमत्कार को समझने के लिए तुम मकड़ी के व्यवहार पर ध्यान देना। कभी-कभी वह दीवार पर चढ़ने की कोशिश करती है। कुछ दूर तक वह चढ़ती है। फिर फिसल कर नीचे गिर पड़ती है। वह फिर चढ़ती है, फिर फिसलती है। लेकिन वह हिम्मत नहीं हारती, उसे तब तक चैन नहीं पड़ता, जब तक वह अपनी मंजिल पर नहीं पहुँच जाती। रानी ने भी हिम्मत नहीं हारी। अपनी हिम्मत के बल पर उसने अपने ऊपर पड़े दुःख के बोझ को उठा कर फेंक दिया। जीवन में दुःख आयें, तो तुम भी हिम्मत नहीं हारना। लेकिन एक बात का ध्यान अवश्य रखना। जब दुःख आयें, तो भगवान् को याद करना, करते रहना। उनसे कहनाह्लह्ल''तुम्हारे सहारे, तुम्हारी कृपा के सहारे मैं अपने दुःखों पर विजय प्राप्त करूँगा। शक्ति तुम्हारी, पुरुषार्थ मेरा।'' अगर रानी के जीवन में चमत्कार घटित हो सकता है, तो तुम्हारे जीवन में भी। बस, भगवान् का सहारा नहीं छोड़ना, उनका हाथ नहीं छोड़ना और पैर आगे बढ़ाते रहना। तब दुःखों का पहाड़ हलका होते-होते फूल बन जायेगा। बड़े-बूढ़ों की इस नसीहत को याद करनाह्लह्ल'हारिये न हिम्मत, विसारिये न हरि नाम'।

□

शिवरात्रि

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

'शिवरात्रि' का अर्थ हैह्लभगवान् शिव की रात्रि। इस धार्मिक अनुष्ठान के महत्त्वपूर्ण अंग हैंह्लचौबीस घण्टे का उपवास और रात-भर का जागरण। प्रत्येक सच्चा शिव-भक्त शिवरात्रि की रात में जागरण करते हुए गहन जप-ध्यान करता है तथा व्रत करता है।

भगवान् शिव की आराधना में पुष्प द्वारा अर्चना, बिल्व-पत्र तथा अन्य पदार्थ भगवान् के स्वरूप लिंग को अर्पित करना तथा दूध, दधि, घृत, मधु, गुलाब-जल इत्यादि विविध द्रव्यों द्वारा अभिषेक करना सम्मिलित है।

सृष्टि-संरचना पूर्ण हो जाने के उपरान्त शिव और पार्वती जब कैलास-शिखर पर निवास कर रहे थे, तब एक बार पार्वती ने भगवान् से पूछाह्लह्ल''हे भगवन्! धर्म, अर्थ, काम और मोक्षह्लह्लइस चतुर्वर्ग के आप ही हेतु हैं। साधना से सन्तुष्ट हो आप ही मनुष्य को यह प्रदान करते हैं। अत: यह जानने की इच्छा है कि किस कर्म, किस व्रत या किस प्रकार की तपस्या से आप सर्वाधिक प्रसन्न होते हैं?''

भगवान् शिव ने उत्तर दियाह्लह्ल''फाल्गुन के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को आश्रय कर जो रात उदय होती है, उसी को 'शिवरात्रि' कहते हैं। उस दिन जो उपवास करता है, वह निश्चय ही मुझे सन्तुष्ट करता है। उस दिन उपवास करने से मैं जैसा प्रसन्न होता हूँ, वैसा स्नान, वस्त्र, धूप और पुष्प-अर्पण से भी नहीं होता।

''भक्त दिन-भर निराहार रहता है तथा रात्रि के चारों प्रहरों में मेरी विभिन्न स्वरूपों में पूजा करता है। प्रत्येक प्रहर तीन-तीन घण्टे का होता है। बहुमूल्य रत्न, धन अथवा पुष्पों की अपेक्षा में अल्प बिल्व-पत्रों से ही अधिक सन्तुष्ट होता हूँ। भक्त को मेरी पूजा-अभिषेक प्रथम प्रहर में दुग्ध द्वारा, द्वितीय प्रहर में दधि द्वारा, तृतीय प्रहर में घृत द्वारा एवं चतुर्थ में मधु द्वारा करनी चाहिए। प्रभात में विसर्जन के पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करा कर विधि-विधान सहित व्रत-कथा सुन कर पारण करना चाहिए। इससे बढ़ कर सरल और सन्तोष-प्रदायक अन्य कुछ भी नहीं है।

''हे प्रिये, इसके साथ जो कथा संयुक्त है, उसका श्रवण करने से इस व्रत की महिमा और शक्ति का ज्ञान होगा।

''एक बार वाराणसी नगर में एक व्याध रहता था। वह एक दिन वन में शिकार करने गया। वहाँ अनेक मृगों का शिकार करके लौटते समय मार्ग में वह थका-माँदा किसी वृक्ष के नीचे सो गया। नींद टूटने पर उसने देखा, चारों ओर भीषण अन्धकार है। यह शिवरात्रि की रात थी, किन्तु वह इससे अनजान था। वह वृक्ष के ऊपर चढ़ गया, शिकार किये हुए जन्तुओं

के गट्ठर को एक डाल में बाँध दिया और प्रात: होने की प्रतीक्षा करने लगा। भाग्यवश वह वृक्ष, मेरा अति-प्रिय बिल्व-वृक्ष था।

''वृक्ष की जड़ में एक अति-प्राचीन शिवलिंग था। वह वृक्ष से बेल-पत्र तोड़-तोड़ कर नीचे गिराने लगा। वसन्त की रात्रि में ओस की बूँदें उसकी देह से लग कर नीचे गिरने लगीं। उस शिकारी के अनजाने में ही किये गये इन कृत्यों से मेरे सन्तोष का पार न रहा। प्रात: हुई और शिकारी अपने घर लौट गया।

''समय आने पर वह व्याध बीमार पड़ा और प्राण निकलने लगे। यमदूत उसे यमराज के पास ले जाने के लिए आये। मेरे गण भी मेरी आज्ञा से उसे मेरे धाम में लाने के लिए पहुँच गये थे। दोनों में भीषण युद्ध हुआ। यमदूत बुरी तरह से हार कर यमराज के पास पहुँचे और सारी घटना सुनायी। यमराज स्वयं उसकी जीवात्मा को ले कर मेरे धाम में आये। तब नन्दी ने उन्हें शिवरात्रि-व्रत की महिमा तथा उसी के कारण व्याध के प्रति मेरे प्रेम का रहस्य समझाया। यमराज व्याध की जीवात्मा को मेरे पास छोड़ कर चले गये।

''वह व्याध जन्म-मरण के बन्धन से छूट गया और सालोक्य मुक्ति को प्राप्त हुआ और वह अनजाने में ही शिवरात्रि को किये गये उपवास और बिल्वार्पण मात्र ही से। इस रात्रि की इतनी शक्ति, पवित्रता और महिमा है!''

भगवान् के मुख से शिवरात्रि और उसके पूजन-उपवास की ऐसी पवित्रता और महिमा श्रवण करके पार्वती अत्यधिक प्रभावित हुईं। उन्होंने यह कथा अपनी सखियों से कही और उन सबने आगे पृथ्वी पर राज करने वाले राजा-रानियों को सुनायी। इस प्रकार शिवरात्रि की महिमा सर्वत्र व्याप्त हो गयी।

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

सूचना

श्री रामनवमी महोत्सव

श्री रामनवमी का पवित्र त्योहार भगवान् श्री विश्वनाथ मन्दिर में **१२ अप्रैल २०११** को मनाया जायेगा। **४ अप्रैल से १२ अप्रैल २०११** तक पवित्र श्री राम-मन्त्र का सामूहिक जप होगा। अन्तिम दिन लोक-कल्याण और विश्व-शान्ति तथा भक्तों के वैयक्तिक कल्याण के लिए विशेष संकल्प से यज्ञ किया जायेगा। अर्चना के साथ सायंकाल को आश्रम के सत्संग में एक विशेष प्रार्थना सभा भी होगी। जो भक्त श्री रामनवमी महोत्सव में सम्मिलित होना चाहते हैं, वे कृपया **'जनरल सेक्रेटरी, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, पत्रालय : शिवानन्दनगर, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखण्ड, पिन : २४९ १९२'** से सम्पर्क करें।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय आश्रम में अमृत महोत्सव

''दिव्य जीवन जियें तथा दूसरों के लिए अनुकरणीय उदाहरण बनें। संस्था की प्रत्येक शाखा सत्य की तीर्थस्थली बन जाये तथा इसका प्रत्येक सदस्य दिव्य जीवन का चलता-फिरता मन्दिर हो। आप सबका एक लक्ष्य है दिव्य जीवन के सन्देश का प्रसार।''

(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

सद्गुरुदेव के दिव्य लक्ष्य की रजत जयन्ती के पावन अवसर पर, उनके द्वारा किया गया यह आह्वान हम सब, जिन्हें अमृत महोत्सव के दुर्लभ सुअवसर को मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, के लिए आज यह एक उद्बोधक आह्वान है। आओ, हम इसका उत्तर दें और उनके आशीर्वाद प्राप्त करें।

१३ जनवरी २०११ को मुख्यालय आश्रम में दिव्य जीवन संघ की संस्थापना के गुरुदेव के पावन लक्ष्य का अमृत महोत्सव अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक समुचित ढंग से विधिवत् मनाया गया। सद्गुरुदेव के परिवार के सदस्यों को इस सौभाग्यशाली सुअवसर में सम्मिलित होने और गुरुदेव के दिव्य लक्ष्य की पूर्ति के लिए और अधिक उत्साहपूर्वक समर्पित होने को प्रेरित करने के उद्देश्य से सभी शाखाओं के प्रतिनिधियों का १२ जनवरी २०११ को एक सम्मेलन आयोजित किया गया।

१२ जनवरी के कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातःकालीन प्रार्थना, ध्यान सत्र तथा उसके उपरान्त प्रभातफेरी से किया गया। शाखा-सम्मेलन शिवानन्द सत्संग भवन में कुल दो सत्रों में हुआ, जिसमें दिव्य जीवन संघ की विभिन्न शाखाओं से ३०० से अधिक सदस्यों ने भाग लिया। पूर्वाह्न सत्र का प्रारम्भ द डिवाइन लाइफ सोसायटी के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने 'जय गणेश' प्रार्थना से प्रातः ८.४५ पर किया। इसके तुरन्त बाद डी एल एस मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने मूल विषय पर प्रवचन देते हुए समस्त उपस्थित सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया तथा सम्मेलन के उद्देश्य का वर्णन किया। सभा के प्रमुख बिन्दुओं के सम्बन्ध में चर्चा करते हुए स्वामी जी महाराज ने प्रतिनिधियों से अनुरोध किया कि दिव्य जीवन धारा को सशक्त एवं सुदृढ़ करने के लिए अपने-अपने विचार प्रकट करें। स्वामी जी महाराज द्वारा मूल विषय पर दिया गया प्रवचन निम्नवत् है :

परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा दिया गया कीनोट एड्रेस

सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के परिवार के उन सभी सदस्यों का मैं हार्दिक स्वागत करता हूँ जो इस पावन महोत्सव को मनाने का सौभाग्य प्राप्त करके यहाँ गुरुदेव की पावन स्थली में आये हुए हैं। द डिवाइन लाइफ सोसायटी (दिव्य जीवन संघ) की संस्थापना-रूपी गुरुदेव के दिव्य लक्ष्य के अमृत महोत्सव के इस पावन-पर्व को मनाने का सौभाग्य मिलना निःसन्देह परमात्मा की अहैतुकी कृपा ही है। यह संस्था प्रारम्भ से ही अपने 'सेवा, भक्ति, दान, पवित्रता, ध्यान एवं आत्म-साक्षात्कार' के उन उदात्त आदर्शों (जो कि वास्तव में विश्व के सभी धर्मों के मूलभूत आदेश एवं

सारभूत सत्य हैं) के द्वारा समस्त विश्व में आध्यात्मिक पुनर्जागरण लाने के अथक प्रयास में निरन्तर संलग्न है।

तो भी अभी बहुत कुछ करना बाकी है, जैसा कि सद्गुरुदेव ने ३ अप्रैल १९६० को अपने एक पत्र में लिखा हैह्न**''दिव्य जीवन का सन्देश निश्चित रूप से हर एक घर तक पहुँचना चाहिए।''** दिव्य जीवन के सन्देश के प्रसारण का पावन कार्य तब तक अत्यन्त उत्साह एवं तीव्र गति से चलता रखना है जब तक कि यह जन-जन के हृदय तक गहरे उतर नहीं जाता। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए युवा पीढ़ी की असीम शक्ति एवं उत्साह तथा अथक कर्मठता एवं उल्लास को उपयोग में लाना होगा। युवा शक्ति में अपने गहन विश्वास को अभिव्यक्त करते हुए गुरुदेव कहते हैंह्न**''केवल एक ही सच्चा और निष्कपट विद्यार्थी सम्पूर्ण जगत् को हिला सकता है तथा सारे संसार को ज्ञान और प्रकाश प्रदान कर सकता है।''**

किन्तु जब हम अपने चारों ओर नज़र दौड़ाते हैं तो यही देखने में आता है कि दुनिया भर की युवा पीढ़ी आज आध्यात्मिकता से पूर्णतया वंचित है। वह भौतिकवाद का अन्धाधुन्ध अनुसरण करने में लगी हुई है। युवा शक्ति एवं युवा बुद्धि को गलत दिशा की ओर जाने से रोकना होगा। अतः हमारी इस वर्तमान पीढ़ी का यह गहन कर्तव्य हो जाता है कि नव-पीढ़ी के हृदयों में नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को बैठायें। हमारे प्रिय गुरुदेव भी हमें चेतावनी देते हुए कहते हैंह्न**''विश्व की भावी आशा युवा पीढ़ी को दिव्य जीवन जीने के लिए प्रेरित एवं सुशिक्षित करना होगा।''**

आज की मेधावी और समझदार युवा पीढ़ी से आप अन्धानुकरण करने की आशा नहीं कर सकते। नई पीढ़ी को आकर्षित और प्रेरित करने के लिए हमारी वर्तमान पीढ़ी को चाहिए कि स्वयं दिव्य जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करे। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज कहते हैं, **''दिव्य जीवन की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात इसे जीना है, मात्र जानना नहीं।''** अतः हम सब आज के सदस्यों, पदाधिकारियों एवं सद्गुरुदेव के भक्तों को चाहिए कि दिव्य जीवन जियेंह्नदिव्यता से पूर्ण, पवित्र और सादगीपूर्ण जीवन जियें। सर्वप्रथम हमने स्वयं अपने में पूर्ण परिवर्तन लाना है, केवल तभी हम दूसरों को पूर्ण रूपान्तरित करने में प्रेरक और सहायक बन सकते हैं। इसीलिए स्वामी विवेकानन्द कहते हैं, ''बनो और बनाओ!''

शाखाओं को चाहिए कि अपने क्षेत्र के युवा-वर्ग को मुख्यालय आश्रम में चल रहे योग-वेदान्त फॉरेस्ट एकाडेमी के कोर्स में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित करें।

वह अपने-अपने क्षेत्रों में बालकों एवं युवाओं को दिव्य जीवन का प्रशिक्षण देने के लिए अवकाश-काल (छुट्टियों के दिनों) में संक्षिप्त कोर्स भी चलायें। विभिन्न आयु-वर्ग की रुचियों एवं आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए भिन्न-भिन्न समूहों के कोर्स होने चाहिए। इन कोर्सों और इनकी गतिविधियों के गठन के समय आध्यात्मिकता के व्यावहारिक पक्ष का मन में पूरा ध्यान रखना चाहिए।

उनके लिए आध्यात्मिक शिविर एवं प्रतियोगिताएँ भी आयोजित करनी चाहिए।

बालकों तथा युवा-वर्ग के उत्तम स्वास्थ्य के लिए शाखाओं को नियमित रूप से योग-कक्षाएँ संचालित करनी चाहिए।

शाखाओं को दैनिक अथवा साप्ताहिक सत्संगों में सम्मिलित होने के लिए नयी पीढ़ी को प्रोत्साहित करना चाहिए तथा उनकी आवश्यकताओं एवं रुचियों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कार्यक्रम और उत्सव आयोजित

करने चाहिए। इसके लिए फिल्मों द्वारा अथवा पावर पॉइंट प्रस्तुतियों द्वारा भी प्रेरणाप्रद सन्देश दिये जा सकते हैं।

विद्यालयों और महाविद्यालयों में लघु पुस्तकों, परिपत्रों और पत्रकों के वितरण द्वारा सद्गुरुदेव के सन्देश नव-युवकों एवं बालकों तक पहुँचाये जाने चाहिए।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं में युवा सदस्यों के पंजीकरण को भी प्रोत्साहन देना होगा। इसमें ध्यान संख्या-वृद्धि की ओर न हो कर गुणात्मक वृद्धि की ओर अधिक रहना चाहिए। युवा सदस्यों को किसी-न-किसी पद पर प्रतिष्ठित भी किया जाना चाहिए जिससे कि सद्गुरुदेव के मिशन को और अधिक सक्रियता एवं उत्साहपूर्वक जारी रखा जा सके।

मुख्यालय आश्रम में बालकों एवं युवा-वर्ग के लिए आध्यात्मिक शिविर तथा प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी हैं। नयी पीढ़ी को सद्गुरुदेव के भव्य एवं प्रेरणाप्रद जीवन से अवगत कराने के लिए 'शिवानन्द चित्रकथा' भी प्रकाशित की गयी है। कुछ शाखाएँ भी इस क्षेत्र में अत्यन्त सराहनीय कार्य कर रही हैं। अन्य शाखाओं को भी इनका अनुसरण करने का प्रयास करना चाहिए।

शाखाओं के सक्रिय सहयोग द्वारा गुरुदेव के 'प्रत्येक घर तक दिव्य जीवन का सन्देश पहुँचाने' के उदात्त लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

आइए, हम सब एक-साथ मिल कर दिव्य जीवन की ध्वजा को ऊँचा उठायें और सद्गुरुदेव की असीम कृपा प्राप्त करें!

परम आराध्य सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज तथा हमारे अतीव प्रिय श्रद्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के आशीर्वाद हम सब पर प्रचुर मात्रा में हों!

* * *

मूल विषय पर प्रवचन (कीनोट एड्रेस) के उपरान्त शाखाओं के प्रतिनिधियों द्वारा मूल्यवान् सुझाव तथा वरिष्ठ स्वामीजीओं द्वारा आशीर्वचन दिये गये।

डी एल एस मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में सद्गुरुदेव के साथ अपने अनमोल क्षणों के संस्मरण सुनाते हुए उपस्थित श्रोताओं को गुरुदेव के दिव्य जीवन के दृष्टिकोण से अवगत कराया। श्री स्वामी जी महाराज ने कहा कि दिव्य जीवन जीने के लिए व्यक्ति को अपने समस्त छोटे-बड़े कार्यों को ईश्वरार्पण करते रहना चाहिए।

डी एल एस मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि सद्गुरुदेव के शिष्य होने के नाते हमें सत्य, अहिंसा और पवित्रतापूर्ण दिव्य जीवन जीना अपना सर्वोपरि कर्तव्य समझना चाहिए। स्वामी जी महाराज ने कहा कि यदि हम सच्चाई के साथ गुरुदेव के उदात्त ज्ञानोपदेशों का पूरी तरह से अनुसरण करेंगे तो गुरुदेव का सुरक्षात्मक हाथ सदैव हमारी रक्षा करेगा।

डी एल एस मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने भक्त प्रतिनिधियों का इतनी कड़ाके की सर्दी को सहन करते हुए दूर-दूर से आने के पीछे निहित गुरुदेव के दिव्य मिशन के प्रति उनकी गम्भीर और गहन समर्पण-भावना की भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री स्वामी जी ने कहा कि हम सबको दिव्य जीवन संघ को गुरुदेव का साकार रूप तथा दिव्य जीवन संघ के कार्यों को गुरुदेव की निजी सेवा समझना चाहिए तथा

ऐसा समझते हुए यह सेवा-कार्य अत्यन्त प्रेम, विनम्रता तथा भक्ति-भाव से करना चाहिए।

श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी महाराज ने प्रतिनिधियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सर्वप्रथम हमें स्वयं को सद्गुरुदेव के सच्चे निष्कपट शिष्य सिद्ध करना चाहिए, उसके बाद ही हम दूसरों को प्रेरित करने का प्रयत्न कर सकते हैं।

श्री स्वामी त्यागवैराग्यानन्द जी महाराज ने आत्म-शुद्धि की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि दिव्य जीवन संघ के सदस्यों एवं पदाधिकारियों को सत्य, अहिंसा, पवित्रता, अस्तेय तथा सन्तोषह्वह्वइन पाँच महाव्रतों का दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिए। स्वामी जी महाराज ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने घर-परिवार में दैनिक रात्रि-सत्संग आयोजित करने का अनुरोध किया।

श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में प्रत्येक प्रतिनिधि को अपने निजी आध्यात्मिक मूल्यांकन करने के लिए 'पाँच-बिन्दु-पैमाना' दिया । साथ ही स्वामी जी महाराज ने कहा कि हम जो-कुछ भी सोचें, बोलें या करें, उस सबका मूल आधार आध्यात्मिकता होनी चाहिए।

श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी महाराज ने शाखा प्रतिनिधियों को गुरुदेव के बीस आध्यात्मिक नियमों में से प्रथम प्रातः चार बजे उठने और उस अमूल्य समय का सदुपयोग करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि इस प्रकार करके हम सद्गुरुदेव के साथ तथा परमाराध्य गुरु महाराज के साथ समस्वरता स्थापित करके शक्ति, ओज, शान्ति एवं आनन्द प्राप्त कर सकते हैं।

विभिन्न शाखाओं में से विशेष वक्ता थेह्वह्वश्रीकृष्ण दास, खातिगुडा (उड़ीसा), डॉ. डी. एन. नरेश, दिल्ली, डॉ. शरद कुमार आचार्य एवं डॉ. रजनीकान्त बेहेरा, बरला (उड़ीसा), श्री शिव प्रसाद, बेंगुलूरू, श्री जयन्तभाई दबे, वडोदरा, श्री एफ. लाल कंसल, चण्डीगढ़, श्री नितिन देशपाण्डे, पुणे, डॉ. एम. महेन्द्रसिंह, इम्फाल, श्रीरामचन्द्र राव, सिकन्दराबाद, श्री वेंकटेश्वर राव, काचिगुडा (हैदराबाद), श्रीरामावतार, पंचकुला (चण्डीगढ़), डॉ. रमणीक शर्मा, चण्डीगढ़, श्री नारायण रथ, भुवनेश्वर तथा श्री प्रकाशचन्द मिश्रा, जयपुर (उड़ीसा)।

शाखा सम्मेलन में उभर कर आने वाले बिन्दु थेह्वह्व

१. सम्मेलन में मुख्यतया इस बिन्दु पर बल दिया गया था कि 'पहले स्वयं दिव्य बनें, फिर दूसरों को दिव्य बनने के लिए प्रेरित करें।' सर्वप्रथम दिव्य जीवन संघ के सदस्यों एवं पदाधिकारियों को स्वयं में सुधार लाना होगा, फिर गुरुदेव के सन्देश का प्रसारण स्वयं ही हो जायेगा।

२. शाखाओं में किये जाने वाले सत्संगों का एक स्तर निर्धारित किया जाना चाहिए।

३. बाल शिविर एवं युवा शिविर आयोजित करने के लिए मुख्यालय आश्रम की ओर से निर्देशन दिये जाने चाहिए।

४. राज्य की विविध शाखाओं की गतिविधियों में ताल-मेल बैठाने के लिए एक प्रान्तीय स्तर की समिति बनायी जानी चाहिए।

५. योग शिक्षक तैयार करने के उद्देश्य से पृथक् योग प्रशिक्षण कोर्स प्रारम्भ किये जायें।

६. दिव्य जीवन सन्देश के प्रचार-प्रसार के लिए इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का उपयोग किया जाये।

७. दिव्य जीवन पत्रिकाओं में प्रश्नोत्तरी नियमित रूप से प्रारम्भ की जानी चाहिए।

८. बालकों और युवाओं में नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की वृद्धि के लिए भक्तों के

निवास-स्थानों में सत्संग आयोजित करने को प्रेरित किया जाना चाहिए।

९. योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी द्वारा महिलाओं के लिए पृथक् रूप से कोर्स आरम्भ किया जाना चाहिए।

१०. महाराष्ट्र में और अधिक शाखाएँ प्रारम्भ की जानी चाहिए।

११. सम्मेलनों और साधना शिविरों के दौरान इच्छुक साधकों को मन्त्र-दीक्षा दी जानी चाहिए।

१२. वरिष्ठ सन्तों को विभिन्न शाखाओं में लोगों को प्रेरित एवं निर्देशित करने हेतु समय-समय पर जाना चाहिए।

१३. प्रत्येक शाखा के दो सदस्य अथवा पदाधिकारियों को योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी द्वारा प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

१४. दिव्य जीवन संघ की शाखाओं को अपनी वेबसाइट खोलने की आज्ञा दी जानी चाहिए।

१५. डिवाइन लाइफ मूवमेंट में नयी पीढ़ी को आकर्षित करने और सम्मिलित करने हेतु विशेष कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए।

१६. युवा सदस्य वृद्धि की ओर ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए।

श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने इस शाखा-सम्मेलन में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सहायता एवं सेवा-कार्य करने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति धन्यवाद व्यक्त करते हुए धन्यवाद-प्रस्ताव पारित किया। विश्व-शान्ति के लिए प्रार्थना और प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

रात्रि सत्संग में विभिन्न शाखाओं से पधारे हुए भक्तों ने सद्गुरुदेव के चरण-कमलों में प्रेमांजलि के रूप में भजन-कीर्तन प्रस्तुत किये।

१३ जनवरी का महिमामण्डित शुभ दिन ब्राह्ममुहूर्त प्रार्थना, ध्यान तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज के आशीर्वचनों से प्रारम्भ हुआ। पूज्य स्वामी जी महाराज ने कहा कि इस पावन दिवस पर हमें सद्गुरुदेव के पावन मिशन के प्रति स्वयं को पुनर्समर्पित करना चाहिए। इसके उपरान्त प्रभातफेरी हुई, जिसमें अत्यन्त कड़कड़ाती ठण्ढ और घना कोहरा होने पर भी सभी अत्यन्त उत्साहपूर्वक सम्मिलित हुए। विश्व-शान्ति और मानव मात्र के कल्याण-मंगल के लिए यज्ञशाला में हवन किया गया।

पूर्वाह्न सत्र में पावन समाधि मन्दिर में पूजा की गयी तथा शिवानन्द सत्संग भवन में सद्गुरुदेव की पावन पादुकाओं की भव्य महापूजा की गयी। समस्त वातावरण दिव्य तरंगों से ओत-प्रोत हो गया। इस पावन अवसर के उपलक्ष्य में दो स्मारिकाओं 'द विजन ऑफ़ डिवाइन लाइफ' (अँगरेजी में) तथा 'दिव्य जीवन सन्दर्शन' (हिन्दी में), 'स्वामी शिवानन्द चित्रकथा' (हिन्दी, तमिल एवं तेलुगु), परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की प्रातःकालीन प्रवचनों की डी. वी. डी. तथा अन्य शाखाओं की पुस्तकों का भी विमोचन किया गया। ज्ञान-प्रसाद वितरण सहित कार्यक्रम समाप्त हुआ।

सायंकाल में श्री सद्गुरुदेव की मधुर स्मृति में गंगा माँ की विशेष पूजा एवं आरती की गयी। रात्रि सत्संग में परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज ने सद्गुरुदेव की प्रेरणाप्रद भव्य जीवन-झाँकियों पर प्रवचन दिया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने पुनर्निर्मित वेबसाइटह्लsivanandaonline.org प्रारम्भ की। विशेष प्रसाद वितरण सहित सत्संग समाप्त हुआ।

परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद सब पर हों! □

एन टी पी सी कनिहा, ओडिशा में ३३ वाँ अखिल ओडिशा डिवाइन लाइफ सोसायटी सम्मेलन तथा युवा शिविर

सद्गुरुदेव के 'जन साधारण में आध्यात्मिक उत्थापन' के दिव्य लक्ष्य के ही अनुसरण में ओडिशा की भीमकांड शाखा द्वारा २७ से ३० दिसम्बर २०१० तक एन टी पी सी कनिहा में अखिल ओडिशा डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३३ वाँ सम्मेलन तथा युवा शिविर आयोजित किया गया। पंचायत हाई स्कूल, बिजिगोल में एक अत्यन्त सुन्दर पण्डाल इस सम्मेलन के लिए सजाया गया था।

डी एल एस मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा २७ दिसम्बर को सम्मेलन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। डी एल एस मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने सम्मेलन की अध्यक्षता की तथा पूज्य गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी ने मुख्य अतिथि पद को सुशोभित किया। आदरणीय श्री एस. के. सिंह जी, जनरल मैनेजर, एन टी पी सी ने स्वागत-भाषण दिया।

दैनिक कार्यक्रम चार सत्रों का थाह्नह्नप्रातःकालीन ध्यान सत्र जिसके बाद प्रभातफेरी और फिर योगासन होते थे; पूर्वाह्न तथा अपराह्न सत्र, जिनमें प्रवचन तथा भजन होते थे; इसके बाद देर सायंकाल में सांस्कृतिक कार्यक्रम का सत्र होता था। श्री स्वामी श्रीधरानन्द जी के सहयोग से श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी योगासन कक्षा संचालित करते थे। आदरणीय श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने प्रातः ध्यानोपरान्त तथा पूर्वाह्न एवं अपराह्न सत्रों में अपने उद्बोधनों द्वारा श्रोताओं को आशीर्वादित किया। आदरणीय श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने पूर्वाह्न एवं अपराह्न सत्रों में प्रेरणाप्रद प्रवचन दिये ।

श्री स्वामी रामराज्यम् जी, श्री स्वामी शिवचिदानन्द जी, श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी, श्री स्वामी ब्रह्मसाक्षात्कारानन्द जी, श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी, बाबा श्री चैतन्य चरण दास जी, बाबा श्री राधाचरण दास जी, परमहंस श्री प्रज्ञानानन्द जी, पूज्य गजपति महाराज श्री दिव्य सिंह देव जी, ब्रह्मचारी श्रीधर चैतन्य, ब्रह्मचारिणी ऋचा चैतन्य, श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी, डॉ. उमेश खेर, डॉ. बी. डी. साहू, इन्जीनियर मिहिर मोहन्ती, इन्जीनियर सत्या, प्रो. ह्रुदानन्द राय, प्रो. विश्वमोहन पटनायक, श्री मदनमोहन पण्डा, श्री उमाकान्त पाणी तथा श्री जयचन्द्र नायक जी ने उपस्थित श्रोताओं को प्रवचन दिये। ओडिशा के विभिन्न स्थानों से २०५९ साधकों ने पंजीकृत हो कर भाग लिया तथा इसके अतिरिक्त निकटवर्ती गाँवों और कस्बों के लगभग एक सहस्र लोगों ने सम्मेलन में भाग लिया। ९८४ भक्तों ने परमाराध्य गुरुमहाराज की पूर्व-रिकार्ड की हुई कैसेट के द्वारा मन्त्र-दीक्षा ली।

इस शुभ अवसर पर सम्मेलन-स्थल के निकट ही अंगुल ब्लड बैंक के सहयोग से रक्तदान शिविर भी आयोजित किया गया, जिसमें १०१ भक्तों ने रक्तदान किया। परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने रक्तदान शिविर का उद्घाटन किया।

पण्डाल के बाहर परम पूज्य गुरुदेव तथा परमाराध्य गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के चित्रों की अत्यन्त सुन्दर प्रदर्शनी लगायी गयी थी जो सभी के लिए आकर्षण का मुख्य केन्द्र थी।

सम्मेलन के ही एक भाग के रूप में एन टी पी सी ऑडिटोरियम में अखिल ओडिशा डिवाइन लाइफ का

छठा शिविर भी आयोजित किया गया था, जिसमें स्कूल एवं कालेज के ५०० विद्यार्थियों ने भाग लिया। ये सब विद्यार्थी ओडिशा के भिन्न-भिन्न स्थानों से आये हुए थे। श्रद्धेय श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज इस कोर्स के डायरेक्टर थे। युवा-वर्ग के शारीरिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास को दृष्टि में रखते हुए इस शिविर का सम्पूर्ण कार्यक्रम अत्यन्त विचारपूर्वक निर्धारित किया गया था जिसमें प्रार्थना, ध्यान, योगासन, प्राणायाम, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, कहानी सुनाना तथा आध्यात्मिक प्रवचन सम्मिलित किये गये थे। इस शिविर के द्वारा सभी विद्यार्थियों ने स्वयं को अत्यन्त लाभान्वित एवं प्रोत्साहित पाया। भगवान् जगन्नाथ जी की अपार कृपा तथा सद्गुरुदेव के आशीर्वाद से राज्य स्तरीय सम्मेलन तथा युवा शिविर अत्यन्त सफल रहे।

कार्यक्रम के समापन-समारोह में एन टी पी सी के एक्ज़ेक्यूटिव डायरेक्टर श्री आर. वेंकटेश्वरन ने कनिहा जैसे सुदूर एकाकी औद्योगिक क्षेत्र में आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसारण का कार्य करने में डिवाइन लाइफ सोसायटी की भूमिका की अत्यन्त सराहना की।

द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय ने इस कार्यक्रम में एन टी पी सी के पदाधिकारियों द्वारा दी गयी सहायता एवं सहयोग की श्लाघा करते हुए हार्दिक धन्यवाद अभिव्यक्त किया। अंगुल शाखा के स्वामी शिवानन्द कल्याण समिति के स्वयंसेवकों द्वारा श्री स्वामी ज्योतिरूपानन्द जी के नेतृत्व में किये गये अथक परिश्रम एवं अद्भुत सेवा अत्यन्त प्रशंसनीय हैं।

परम पिता परमात्मा तथा सद्गुरुदेव की अपार कृपा-वृष्टि सब पर हो!

सूचना

आध्यात्मिक रिट्रीट

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा की तृतीय वर्षगाँठ का महोत्सव
६, ७ व ८ मार्च २०११

द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा, शिवानन्द आश्रम चंडीगढ़ की तृतीय वर्षगाँठ ६, ७ व ८ मार्च २०११ को मनायी जा रही है। इस अवसर पर एक आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया जा रहा है। द डिवाइन लाइफ सोसायटी (अन्तर्राष्ट्रीय) के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज तथा मुख्यालय आश्रम, ऋषिकेश के अन्य वरिष्ठ सन्त-महात्मा अपनी उपस्थिति से इस अवसर की शोभा बढ़ायेंगे। सभी भक्तों से सप्रेम-सादर अनुरोध है कि इस कार्यक्रम में सम्मिलित हो कर आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करें।

पंजीकरण एवं जानकारी के लिए कृपया सम्पर्क करें

श्री एफ. लाल. कन्सल, अध्यक्ष, मो. नं. ०९८१४०१५२३७
डॉ. रमणीक शर्मा, सचिव, मो. नं. ०९८१४१०५१५४

पता : शिवानन्द आश्रम, द डिवाइन लाइफ सोसायटी, चंडीगढ़ शाखा
२, सेक्टर २९ ए, चंडीगढ़ १६० ०३०
दूरभाष : ०१७२-२६३९३२२

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

श्री गुरुदेव के गहन आशीर्वाद से द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, लक्ष्मणझूला के निकट तपोवन में स्थित 'शिवानन्द होम' के माध्यम से विनम्र सेवा में निरन्तर निरत है। यह ऐसे आवास-हीन निर्धन रोगियों को चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध करता है, जिन्हें बीमार होने के कारण भरती किये जाने की आवश्यकता है, किन्तु साधन-हीन होने के कारण असमर्थ हैं।

सर्दियों की एक बर्फीली सुबह, सड़क के किनारे कपड़ों और कम्बल की गठरी के भीतर एक आकृति-सी हिलती प्रतीत हो रही थी। यह आकार कँपकँपाता हुआ खाँसी की आवाज करने के साथ-साथ हिल भी रहा था। उठा कर जब इसे भरती के लिए लाया गया, तो यह एक महिला थी, मात्र २४ किलो भार की प्रौढ़ महिला जो कि तीव्र ज्वर से ग्रसित थी। जाँच-परीक्षण होने पर वह फुफ्फुसीय तपेदिक से पीड़ित पायी गयी। अतः उसी समय उसका सही उपचार आरम्भ कर दिया गया। उस समय तो वह अपना नाम-पता तक बताने में असमर्थ थी, किन्तु धीरे-धीरे 'होम' की दिनचर्या में ढलने लगी और कुछ-कुछ खुलने लगी, दूसरे साथियों से बातचीत भी करने लगी तथा वजन में भी सुधार आने लगा। कुछ ही दिनों में उसने अपनी सुमधुर बाल-सुलभ मुस्कान से सबका मन जीत लिया।

इसके कुछ ही दिनों बाद एक मन्दमति लड़का भरती के लिए लाया गया। वह मुख्यालय आश्रम क्षेत्र के निकट सड़क के किनारे पड़ा हुआ पाया गया था। वह चीखता-चिल्लाता इधर-उधर भागता है, यद्यपि उसकी समझ काफी हद तक ठीक प्रतीत होती है, किन्तु बातचीत करने में अक्षम है। शीतकाल हमारे लिए तो अपने पूर्ण यौवन पर है, किन्तु हमारे साथी भाई-बहन जिनका आवास खुले आसमान तले ही है.... उनका क्या हाल ? कितने सफल रहेंगे इसे झेल पाने मेंह्वह्वकौन जाने!

इस माह पाँव में संक्रामक घाव लिये हुए कई रोगी भी भरती किये गये जो प्रतिदिन की मरहमपट्टी और घावों की सफाई तथा दवाई से ठीक हो रहे हैं। अभी हाल ही में एक महिला सड़क किनारे नाली में से उठा कर लायी गयी है जो आधे-अधूरे वस्त्रों से आवृत थी। उसके सिर और आँखों में घाव थे तथा वह अर्ध-मूर्छित अवस्था में थी। चिकित्सा किये जाने के उपरान्त उसने बताया कि उसका सामान लूट कर उसे इस स्थिति में पहुँचाया गया था। वह पढ़ी-लिखी महिला थी तथा अपना नाम-पता भली-भाँति लिख सकती थी। कुछ ही दिनों की चिकित्सा के उपरान्त ठीक होने पर उसे घर भेज दिया गया। जय चिदानन्द! जय श्री राम!

''कितने अच्छे हैं भगवान्! मेरे हृदय में प्रशंसापूर्ण गीत भर दिये उन्होंने!

कितने अच्छे हैं भगवान् सदा ही! रात कितनी भी अँधेरी हो फिर भी उनका प्रकाश तो चमकेगा ही!''

(डी. मोयन)

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' ***स्वामी शिवानन्द***

क्रिसमस-पूर्व-सन्ध्या समारोह एवं क्रिसमस-नव-वर्ष आध्यात्मिक-साधन

आश्रम के स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन के उपभवन के 'सत्संग हॉल' में पवित्र क्रिसमस २४ दिसम्बर २०१० को मनाया गया। आश्रम के प्रवेश की सीढ़ियों से सत्संग भवन के प्रवेश-द्वार तक श्रद्धालुओं के स्वागत में एवं उनके मार्ग-दर्शन के लिए रोशनी सजायी गयी। आश्रमवासियों का साथ, क्षेत्र के सभी भक्त-गणों ने, इस आनन्ददायक समारोह मनाने में दिया। समारोह ७.३० बजे सन्ध्या को 'जय गणेश' कीर्तन से प्रारम्भ हो कर मध्य-रात्रि बाद पवित्र प्रसाद-वितरण के साथ सम्पन्न हुआ।

सत्संग-भवन के बीच सामने एक मन्दिर में जन्म-दृश्य का प्रदर्शन किया गया, जिसमें नवजात-शिशु का जन्म दिखलाया गया था। भवन के सामने दाहिनी ओर बड़े सुन्दर ढंग से सुसज्जित क्रिसमस वृक्ष रखा गया था।

सन्ध्या-समय जर्मन, फ्रेंच, डच, जापानी, चीनी, मलयालम, हिन्दी और अँगरेजी में अनेकों गीत गाये गये। बहुतेरे भक्ति-गान कीर्तन और भजन के रूप में गाये गये जिससे कि सन्ध्या-कार्यक्रम में सुन्दरता आ गयी। 'स्नोमैन' नामक एक छोटी फिल्म ने बच्चों और वयस्कों में समान रूप से खुशियाँ भर दीं। बाइबल-पाठ एवं उनके गीत ११ बजे रात्रि से प्रारम्भ हुआ और मध्य-रात्रि तक चला। सन्ध्या का समापन मौन-ध्यान एवं समापन-प्रार्थना से किया गया।

दिनांक २६ दिसम्बर २०१० से १ जनवरी २०११ तक १५ वाँ वार्षिक क्रिसमस-नव-वर्ष आध्यात्मिक-साधन मुख्यालय में विदेशी भक्तों के लिए हुआ। पन्द्रह देशों के साठ भक्तों ने इस लाभप्रद सत्र में भाग लिया। आश्रम के वरिष्ठ स्वामिओं द्वारा स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन के उपभवन के 'सत्संग हॉल' में मध्य-प्रातः उद्‌बोधन किया गया। वक्ताओं ने अपना ज्ञान एवं सूक्ष्मदर्शिता, इस वर्ष के प्रासंगिक-विषय 'क्या आज के दिन में दिव्य जीवन जीना सम्भव?' पर प्रस्तुत किया। प्रत्येक सन्ध्या को निर्देशित-ध्यान किया गया जिसे भाग लेने वालों ने बहुत सराहा। समाधि-हॉल का प्रातः-ध्यान और रात्रि-सत्संग भी इस सफल कार्यक्रम में सम्मिलित किया गया था।

श्रद्धा नहीं, तो ज्ञान नहीं

जीवन का लक्ष्य ईश्वर-साक्षात्कार है। जीवन श्रद्धा तथा ज्ञान है। साधक के लिए श्रद्धा प्रमुख गुण है। श्रद्धा नहीं, तो भक्ति नहीं। श्रद्धा नहीं, तो ज्ञान नहीं।

कुसंगति, काम, लोभ तथा पत्नी, पुत्र और सम्पत्ति के प्रति मोह एवं असात्त्विकताह्नह्नये श्रद्धा के शत्रु हैं। हलका, पौष्टिक तथा सात्त्विक आहार कीजिए।

ध्यान कीजिए। इसी क्षण अपरोक्षानुभव से उसका साक्षात्कार कर आत्म-सुख का उपभोग कीजिए।

स्वामी शिवानन्द

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अहमदाबाद, उस्मानपुरा (गुजरात): शाखा ने दैनिक प्रभातीय सत्र में प्रार्थना और योगासन तथा प्रति माह प्रथम रविवार को पादुका-पूजा सम्पन्न किये।

अम्बाला (हरियाणा): शाखा द्वारा दिसम्बर २०१० माह में दैनिक सान्ध्य-सत्संग पूर्ण करके आई. टी. आई. पोलिटेक्निक संस्था में १०० छात्रों की प्रतिभागिता युक्त ३ दिवसीय योगासन-तालीम कैम्प का आयोजन और १०० फल-वृक्षों का रोपण सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ। दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा निःशुल्क सेवाएँ चलती रहीं।

बढ़ियाउस्ता (ओडिशा): शाखा के श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती के दिनभर के कार्यक्रमों में प्रभातफेरी, ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, पादुका-पूजा, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण, प्रत्येक श्लोक द्वारा आहुति युक्त गीता-यज्ञ, भजन-कीर्तन, सान्ध्य-सत्संग और प्रसाद-सेवन आदि समाविष्ट थे।

बेंगुलूरू (कर्नाटक): शाखा ने प्रति गुरुवार, प्रति शुक्रवार पादुका-पूजा, स्वाध्याय, भक्ति-संगीत तथा देवी-पूजा और स्तोत्र-पाठ पूर्ण करके प्रथम, तृतीय और चतुर्थ रविवार के दिनों को विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों को सम्पन्न किया।

भिलाई (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा प्रति माह के प्रथम रविवार को पादुका-पूजा सहित मासिक सत्संग, प्रति मंगलवार को तथा प्रति शुक्रवार को मातृ-सत्संग, पादुका-पूजा, स्तोत्र-पाठ, भजन-प्रस्तुति एवं दो एकादशी की तिथियाँ स्तोत्र तथा गीता-पारायण आदि से परिचालित हुए।

भुवनेश्वर (ओडिशा): नियमित गतिविधियाँह्लह्ल दैनिक पादुका-पूजा, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, गत दो माहावधि में चार विशेष सत्संग और दो घण्टोंपर्यन्त संकीर्तन और हरिहात। विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) शरद-रास : कार्तिकी पूर्णिमा पर्यन्त दैनिक ढाई घण्टों के ५ दिवसीय कार्यक्रम। (२) ८६ छात्रोंयुक्त युवा कैम्प जिसमें ३९ युवानों और ४७ युवतियों ने भाग लिया। दिनांक १२ दिसम्बर को एक माध्यमिक स्कूल में उसका आयोजन किया गया था। योगासन-तालीम के आधिक्य में आदरणीय श्री स्वामी शिवस्वरूपानन्द जी, आदरणीय श्री स्वामी सदाशिवानन्द जी और आदरणीय प्रोफेसर पी.सी._महापात्रा जी और अन्य विद्वानों के आध्यात्मिक प्रवचन किये गये।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा ने दिनांक १७-१२-१० को गीता-जयन्ती मनायी, दिनांक ३-१२-१० को सामूहिक कीर्तन, द्वितीय मंगलवार और अन्तिम शनिवार को भक्तों के निवास-स्थान पर सत्संग; सायं ४-३० से ६-०० पर्यन्त साप्ताहिक सत्संग, भजन-कीर्तन, श्रीमद् भागवतम् का पाठ किया गया। २५-१२-१० को महामृत्युंजय मन्त्र, गायत्री मन्त्र द्वारा हवन, विश्व-शान्ति के लिए हवन, मृत्युंजयेश्वर महादेव जी के मन्दिर में नित्य द्विवार और प्रदोष के दिन सायंकालीन विशेष पूजा, ''चिदानन्द शिक्षा सहायक निधि'' के माध्यम से निर्धन एवं मेधावी बालकों को छात्रवृत्ति का दान भी सम्पन्न हुए।

बुगुडा (ओडिशा): शाखा के प्लॅटीनम-ज्युबिली के अन्तर्गत आयोजित विशेष कार्यक्रमह्लह्लदिनांक ५ दिसम्बर को श्रीमद् भागवतम् के और दिनांक १२ दिसम्बर को श्रीमद् भगवद् गीता के सम्पूर्ण पारायण; श्री हनुमान चालीसा के १०८ आवर्तन दिनांक २५ दिसम्बर को, दिनांक १० जनवरी २०११ को हाईस्कूल के छात्रों हेतु निबन्ध-स्पर्धा और मिडल स्कूल के छात्रों हेतु भगवद् गीता के पाठ की स्पर्धा;

तथा दिनांक १३ जनवरी २०११ को विशेष साधना-दिन एवं निर्धनों को अन्न-दान तथा वस्त्र-वितरण।

छत्रपुर (ओडिशा): दैनिक, साप्ताहिक तथा एक विशेष सत्संग के समीपवर्ती ग्राम में आयोजन सहित पाँच विशेष सत्संग, शिवानन्द-दिवस तथा चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजा और संक्रान्ति-दिवस को श्री सुन्दरकाण्ड-पारायण के अतिरिक्त, गीता-जयन्ती को ३ दिवसीय गीता-पारायण और शालेय छात्रों के लिए गीता-पाठ की स्पर्धा का आयोजन शाखा ने सम्पन्न किया।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): दैनिक पूजा और रामायण-पाठ, प्रति बुधवार को साप्ताहिक सत्संग के आधिक्य में, संन्यासी गण तथा जरूरतमन्द निर्धनों को कम्बल, शाल, स्वेटरों का वितरण और निर्धनों को स्वास्थ्य के लिए आर्थिक सहाय आदि शाखा की गतिविधियाँ थीं।

घाटपदमुर, जगदालपुर (छत्तीसगढ़): शाखा की दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय सभा एवं सान्ध्य-सत्संग के अतिरिक्त शाखा ने प्रति गुरुवार पादुका-पूजा, प्रति शनिवार श्री हनुमान जी के, प्रति रविवार श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र के पाठ करके प्लॅटीनम-ज्युबिली के कार्यक्रमों में २ दिवसीय अखण्ड रामायण पाठ (जिसमें ७ रामायण-मण्डलियों ने भाग लिया), हवन, सत्संग और महाप्रसाद भण्डारा किये जिनमें ८०० जन प्रतिभागी हुए। ये कार्यक्रम दिनांक २५-२६ दिसम्बर को किये गये।

गुमरगुण्डा (छत्तीसगढ़): शाखा की गतिविधियाँ ह्लदैनिक त्रिवार आरती, ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन-वर्ग, सान्ध्य-सत्संग; साप्ताहिक : प्रति गुरुवार को पादुका-पूजा, प्रति शनिवार श्री हनुमान जी के स्तोत्र, अन्य दिनों को स्तोत्र-पाठ।

हैदराबाद, काचिगुडा (आन्ध्र प्रदेश): परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने दिनांक ७ दिसम्बर को शाखा में पधार कर दिनांक १९ दिसम्बर को शाखा द्वारा प्लॅटीनम-ज्युबिली के दिन-भर के निम्नांकित कार्यक्रमों में उपस्थिति दीह्लप्रभातफेरी, पादुका-पूजा, तीन सुप्रसिद्ध विद्वानों द्वारा प्रवचन, मध्याह्न-भोजन, एक नूतन शिक्षात्मक कार्यक्रम, जिसमें विद्वानों तथा भक्तों द्वारा पुस्तकों की रूपरेखा सहित उनका विहंगावलोकन, भक्ति-संगीत, सायंकाल में दो प्रवचन, पूज्य गुरुदेव तथा परम पूज्य गुरुमहाराज के जीवन एवं शिक्षा विषयक दो वीडियो-कैसेट द्वारा दर्शन-प्रवचन, भजन-कीर्तन आदि। आन्ध्र प्रदेश की राज्य सरकार के रेवेन्यु डिपार्टमेन्ट के मुख्य सचिव श्री डॉ. के. वी. रमणाचारी जी तथा अन्य महानुभावों ने कार्यक्रमों में उपस्थिति दी।

हैदराबाद, आर. सी. पुरम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा ने दिनांक ८ दिसम्बर को प्लॅटीनम-ज्युबिली के अन्तर्गत विशेष कार्यक्रमों में पादुका-पूजा, स्वाध्याय और दो प्रवचन एवं शाखा के स्थापना-दिन १६ दिसम्बर को पादुका-पूजा, प्रार्थना, भजन, आदरणीय श्री स्वामी सत्यव्रतानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी मुक्तानन्द जी द्वारा प्रवचन युक्त मध्याह्न को २-३० बजे अपराह्न-सत्र की भोजन सहित समाप्ति की। २०० भक्तों की उपस्थिति थी। सान्ध्य-सत्संग मध्यरात्रि को समाप्त हुआ।

जयपुर, राजा पार्क (राजस्थान): शाखा के प्लॅटीनम-ज्युबिली के अन्तर्गत नियोजित कार्यक्रमह्लह्ल(१) ७५ प्रतिभागियों सहित श्री हनुमान चालीसा के पाठ। (२) दिनांक १४ से दिनांक २० पर्यन्त, विशेष उत्सव सहित श्रीमद् भागवत सप्ताह। (३) आध्यात्मिक शिविर : दिनांक नवम्बर २१ से दिनांक २३ नवम्बर पर्यन्त आदरणीय श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी के दैनिक प्रवचन, ध्यान, भजन-कीर्तन सहित। (४) निबन्ध-लेखन तथा भजन-प्रस्तुति की स्पर्धाएँ, १५ शालाओं के ६४ छात्रों की प्रतिभागिता के साथ और कैश रुपये ५००, रुपये ३००, रुपये २०० और रुपये १०० तथा ज्ञानप्रसाद युक्त पारितोषिक-वितरण। (५) श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती को दिनांक १२ से दिनांक १७ पर्यन्त पाँच

सुप्रसिद्ध विद्वानों के प्रवचन, सामूहिक स्तोत्र-पाठ, ४८ प्रतिभागियों युक्त गीता-यज्ञ किये गये।

जयपुर (ओडिशा): शाखा की दैनिक, साप्ताहिक द्विवार सत्संगह्लद्विवार पूजा के अतिरिक्त हवन, पूजा, प्रसाद-सेवन युक्त 'शिवानन्द-दिवस' के कार्यक्रम के साथ-साथ विशेष गतिविधियों में (१) श्रीमद् भगवद् गीता-जयन्ती को सम्पन्न हवन के समान (२) दिनांक १९ तथा दिनांक २६ दिसम्बर को, १०० प्रतिभागियों युक्त हवन (३) दिनांक १२ दिसम्बर को, शाखा की इमारत के उद्घाटन के दिन, जिले की अनेक शाखाओं के १५० भक्तों युक्त विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम। (४) इनके पूर्व श्री नवरात्रि-पूजा के अवसर पर प्रभातीय और सान्ध्य-पूजा सहित कार्यक्रम। (५) प्लॅटीनम-ज्युबिली के अवसर पर, दिनांक २६ से दिनांक ३० नवम्बर पर्यन्त, श्रीमद् भगवद् गीता तथा उपनिषदों पर प्रवचन आयोजित हुए।

कानपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा द्वारा प्रति मंगलवार को रामायण-पाठ, मासिक सत्संग के अतिरिक्त श्री विजयादशमी को एक अनाथालय के छात्रों सहित सत्संग। उन्हें भोजन-दान तथा दीपावली के पर्व पर वस्त्र और मिठाइयों का वितरण हुआ। दिनांक १३ जनवरी २०११ को निबन्ध-प्रतियोगिता आयोजित हुई।

कंटाबाँझी (ओडिशा): स्वाध्याय सहित साप्ताहिक सत्संग के आधिक्य में शाखा ने श्रीमद् भगवद् गीता-जयन्ती को दिनभर के पारायण, स्तोत्र-पाठ, स्वाध्याय, यज्ञ, आरती, नारायण-सेवा और प्रसाद-सेवन सम्पन्न किये।

खातिगुडा (ओडिशा): शाखा के दैनिक, साप्ताहिक, एकादशी के आध्यात्मिक नियमित कार्यक्रमों के साथ-साथ दिनांक ५ दिसम्बर को १२ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन और नारायण-सेवा की पूर्णता हुई।

मदुरै (तमिल नाडु): शाखा का, निज, ३२ वाँ, शिवानन्द-अध्ययन-मण्डली का स्थापना-दिन शिवानन्द-दिवस को सुप्रसिद्ध विद्वानों के प्रवचनों युक्त, शिवानन्द विद्यालय, शिवानन्द सत्संग भवन, शिवानन्द-अध्ययन मण्डली में तथा अन्य चार स्थानों में मनाया गया।

महासमुंद (छत्तीसगढ़): नियमित गतिविधियाँह्लह्ल ब्राह्ममुहूर्तीय सत्र, योगासन, सायंकालीन पाठ और भजन। विशेष गतिविधियाँह्लह्लशिवानन्द-जयन्ती को दिनभर के आध्यात्मिक कार्यक्रमों में प्रातःकालीन सत्र, आदरणीय श्री स्वामी विद्यानन्द जी का पूज्य गुरुदेव विषयक प्रवचन, रात्रि के १०-०० पर्यन्त १२ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड जप और श्री रामायण-पाठ। अनेक महानुभावों तथा प्रतिष्ठित-प्रमुख नागरिकों ने उपस्थिति दी।

मोईरंग (मणिपुर): दैनिक चल-सत्संग, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा देव-उत्थान (प्रबोधिनी) एकादशी को श्री श्री राधा जी और श्री कृष्ण जी के विग्रहों युक्त रथ-यात्रा में संकीर्तन-नगर-यात्रा आदि शाखा द्वारा सम्पन्न हुए।

नई दिल्ली, स्वामी शिवानन्द कल्चरल एसोसियेशन : विशेष गतिविधियाँह्लह्ल(१) दिनांक ३१ अक्तूबर को ''श्री विष्णु सत्संगम्'' द्वारा ३ शाखाओं के श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण। (२) दिनांक १२ दिसम्बर को विविध शालेय तथा महाविद्यालयीय विशाल छात्र-समूहों की प्रतिभागिता युक्त 'गीता-पाठ' प्रतियोगिता। (३) श्रीमद् भगवद् गीता-जयन्ती को होमात्मक महायज्ञ, जिसमें आदरणीय श्री स्वामी यतिधर्मानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी ने अपनी पावन उपस्थिति दी। भण्डारा, प्रसाद-सेवन हुआ। (४) शिवानन्द-जयन्ती : आध्यात्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ 'वृन्दावन-धाम' में २५० वृद्धाओं को भण्डारा। (५) चिदानन्द-जयन्ती : आध्यात्मिक कार्यक्रमों सहित ६०० निराधार कन्याओं को नाश्ता कराया गया। इनके साथ-साथ नियमित सत्संग, रविवारीय औषधालय और मेडिकल परीक्षण भी चलते रहे।

पटियाला (पंजाब): शाखा ने मासिक चल-सत्संग के अतिरिक्त दिनांक २०, २१ नवम्बर को उत्तर क्षेत्रीय आध्यात्मिक परिषद् आयोजित की, जिसमें मुख्यालय के अनेक वरिष्ठ स्वामी जी गण ने प्रवचन तथा आध्यात्मिक मार्गदर्शन दिये। ''युवा-जागृति'' विषय पर परिषद् आयोजित हुई थी।

राजकोट (गुजरात): शाखा के रविवार के और शनिवार के सप्ताहिक सत्संगों के साथ, आदरणीय श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द का ७ दिवसीय योगासन कैम्प; माह अक्तूबर-नवम्बर-दिसम्बर की अवधि में सामाजिक सेवा में (१) राजकोट और वांकानेर में निःशुल्क होमियोपैथिक औषधालय। (२) शिवानन्द भवन में नेत्र-यज्ञ : ३८० मरीजों को परीक्षण सेवा तथा निःशुल्क चश्मा-वितरण किया गया। (३) ग्राम्य-विस्तार में नेत्र-यज्ञह्वह्व४ कैम्प, ७६० मरीजों के परीक्षण, ८८ मरीजों का शल्य-क्रिया के लिए वीरनगर को प्रेषण। (४) दन्त-चिकित्सालय । (५) दो दन्त-यज्ञ। (६) दो आयुर्वेदिक कैम्प। (७) प्रति माह दिनांक १३ को निर्धन मरीजों को अन्नदान। (८) विविध मरीजों को रुपये ५४,००० की आर्थिक सहाय। (९) अस्पताल में भर्ती बालकों को मिठाइयाँ और आवाज शून्य पटाखों का वितरण।

राउरकेला (ओडिशा): दैनिक गतिविधियाँह्वह्वदैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय सभा, योगासन, प्रभातीय सत्र पादुका-पूजा, सान्ध्य-सत्संग प्रति गुरुवार को, साप्ताहिक चल-सत्संग, शिवानन्द-दिवस तथा चिदानन्द-दिवस को प्रभातीय और सान्ध्य कार्यक्रम, रविवारीय होमियोपैथिक औषधालय। विशेष गतिविधियाँह्वह्व(१) प्रतिष्ठा दिन : पूर्वाह्न सभा में पादुका-पूजा, भजन-कीर्तन, स्वाध्याय, सत्संग सान्ध्य-सत्र में। (२) श्रीमद् भागवतम् : पूर्ण पाठ, प्रवचन, अन्तिम दिन को प्रसाद-सेवन। (३) श्री सुन्दरकाण्ड : दिनांक १२ से दिनांक १८ नवम्बर पर्यन्त ७ दिवसीय प्रवचन। (४) परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि : भजन-कीर्तन, स्कन्दपुराण में से व्याख्या।

सालेपुर (ओडिशा): दैनिक और नियमित गतिविधियों के उपरान्त शाखा की विशेष गतिविधियाँ निम्नानुसार थींह्वह्व(१) परम पूज्य श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि : पादुका-पूजा, सत्संग। (२) आदरणीय श्री स्वामी शिवकृपानन्द जी की पुण्यतिथि : श्रीमद् भगवद् गीता का सम्पूर्ण पारायण, पादुका-पूजा, सत्संग, सुवेनीर (स्मारिका) का प्रकाशन। (३) महामन्त्र अखण्ड कीर्तन : दिनांक २२ और २८ दिसम्बर को, ६ घण्टों का कीर्तन। (४) श्रीमद् भागवत सप्ताह : दिसम्बर ६ से दिनांक १२ पर्यन्त। (५) श्रीमद् भगवद् गीता जयन्ती : गीता-यज्ञ।

साउथ बलण्डा (ओडिशा): शाखा ने निज दैनिक और साप्ताहिक गतिविधियों के आधिक्य में दिनांक ३ दिसम्बर को १२ घण्टों का महामन्त्र का अखण्ड कीर्तन, संक्रान्ति-दिन को ३ घण्टों का महामृत्युंजय-मन्त्र का जप, दिनांक १८ दिसम्बर को प्लॅटीनम-ज्युबिली के अन्तर्गत छात्रों के लिए निबन्ध प्रतियोगिता।

सुनाबेडा (ओडिशा): साप्ताहिक द्विवार सत्संग, कार्तिकी पूर्णिमा को पादुका-पूजा, १३ घण्टों का अखण्ड संकीर्तन, नगर-कीर्तन-यात्रा और प्रसाद-सेवनह्वह्वशाखा ने ये सब सुचारु रूप से सम्पन्न किये।

सुनाबेडा महिला शाखा (ओडिशा): नियमित गतिविधियों की सम्पन्नता के अतिरिक्त शाखा ने नवरात्रि-पूजा और कार्तिकी पूर्णिमा को १२ घण्टों का महामन्त्र का संकीर्तन आदि पूर्ण किये।

वडोदरा (गुजरात): शाखा ने प्रति गुरुवार सत्संग, शिवानन्द-दिवस और चिदानन्द-दिवस को पादुका-पूजा, मन्त्र-जप किये। सामाजिक सेवा में साप्ताहिक चार दिनों को होमियोपैथिक औषधालय की सेवाएँ तथा १०० निर्धन मरीजों को निःशुल्क औषधियों का वितरण आदि सम्पन्न किये।

□